मुक्तिदाता येशु का शुभ संदेश
लेखक शिष्य मरकुस

पुस्तक की कुछ ज़रूरी बातें

यह मुक्तिदाता येशु के जीवन पर आधारित चार सत्य कहानियों में से एक है। शिष्य मरकुस प्रभु येशु के आरंभिक सत्संग के सदस्य थे (देखिए राजदूतों 12:12,25; 15:37), परंतु वह प्रभुजी के बारह राजदूतों में नहीं थे। यह माना जाता है कि मरकुस को गुरु येशु के बारे में स्वयं राजदूत पतरस ने जानकारी दी थी।

शिष्य मरकुस मुक्तिदाता येशु को अद्‌भुत चमत्कार करने वाले के रूप में प्रस्तुत करता है जो दुनिया को मुक्ति देने के लिए अपने प्राणों की बलि देते हैं। परमात्मा ने प्रभु येशु को शिक्षा देने, बीमारों को ठीक करने, अशुद्ध आत्माओं को निकालने, तूफान को शांत करने और पापों का हिसाब मिटाने का पूरा अधिकार दिया है। इन सब बातों का अर्थ यह नहीं कि प्रभु येशु लोगों पर अधिकार जताने आए थे, परंतु वह तो यह शिक्षा देने आए थे कि हम सब परमात्मा की छत्र-छाया में जीवन बिताएँ।

मुक्तिदाता येशु ने कहा कि वह दूसरों से सेवा कराने नहीं, परंतु सेवा करने और बहुत से लोगों को मुक्ति देने के बदले में अपने प्राणों की बलि देने आए हैं (10:45)। उन्होंने सेवा करते हुए अपना जीवन बिताया और हमें भी सिखाया है कि हम भी ऐसा ही करें। तो आइए प्रभु येशु के शुभ संदेश सुनें और उसके अनुसार चलें।

प्रार्थना - “हे परमात्मा, शिष्य मत्तियाह को मुक्तिदाता येशु के बारे में इस पुस्तक के बारे बताने की प्रेरणा देने के लिए आपका धन्यवाद।

यह आपकी कृपा है कि हमें आपका ज्ञान, रोगों से छुटकारा और मुक्ति प्राप्त करने का यह अवसर मिला है।”

… ■ …

1

अपने पापों से पश्चाताप करो

[1]परमात्मा-पुत्र+ मुक्तिदाता येशु के बारे में शुभ संदेश की यहाँ से शुरुआत होती है। [2]यह उसी तरह से शुरू हुआ जैसा कि परमात्मा के प्रवक्ता यशायाह की पुस्तक में लिखा गया है,

“ध्यान दो, मैं तुम्हारे लिए अपना दूत भेज रहा हूँ।
वह तुम्हारे लिए रास्ता तैयार करेगा।
[3]वह सुनसान बंजर जगह में पुकारेगा,
‘प्रभु के आने के लिए रास्ते को तैयार करो
और हर बाधा को दूर करो।’”

[4]समर्पण-स्नान दाता योहन सुनसान जगह में आए और जब लोग उनसे मिलने आने लगे तो योहन ने लोगों से यह कहा, “अपने बुरे कर्मों से पश्चाताप का समर्पण-स्नान लो, तब परमात्मा तुम्हारे बुरे कर्मों के खाते को मिटा देंगे।”

[5]यहूदिया प्रदेश के सब लोग और यरूशलम शहर के सारे निवासी योहन के पास आए और अपने पापों को सबके सामने स्वीकार कर यरदन नदी में उनसे समर्पण-स्नान लेने लगे।

[6]योहन ऊँट के रोएँ के कपड़े पहनते और कमर में चमड़े का बेल्ट बाँधते थे। टिड्डियाँ और शहद उनका भोजन था।

[7]योहन ने यह घोषित किया, “मुझसे अधिक शक्तिशाली व्यक्ति मेरे बाद आ रहे हैं। मैं तो इस योग्य भी नहीं कि उनके जूतों के फीते भी खोल सकूँ। [8]मैंने तुम्हें पानी से समर्पण-स्नान दिया है, परंतु वह तुम्हें परमात्मा की पवित्र आत्मा से स्नान देंगे।”

1:3 यशायाह 40:3; मलाकी 3:1

परमात्मा पुत्र का जंगली जानवरों के बीच वास

[9]उन दिनों प्रभु येशु ने गलील प्रदेश के नासरत नगर से आकर योहन से यरदन नदी में समर्पण-स्नान लिया। [10]प्रभु येशु पानी से बाहर निकल ही रहे थे कि उन्होंने आकाश और परमस्वर्ग को खुलते और परमात्मा की पवित्र आत्मा को सफ़ेद कबूतर के समान उन पर आते देखा। [11]तब परमस्वर्ग से परमात्मा की यह आवाज़ सुनाई दी, “तुम मेरे प्रिय पुत्र हो और मैं तुमसे बहुत खुश हूँ।”

[12]इस घटना के बाद पवित्र आत्मा प्रभु येशु को तुरंत सुनसान बंजर जगह में ले गया। [13]वहाँ शैतान चालीस दिन तक उन्हें अलग-अलग तरीकों से परखता रहा। प्रभु येशु जंगली जानवरों के साथ रहे और स्वर्गदूत उनकी सेवा करते थे।

गुरु की अपने प्रथम शिष्यों को चुनौती

[14]योहन के गिफ्तार होने के बाद प्रभु येशु गलील प्रदेश में आए और परमात्मा का शुभ संदेश सुनाने लगे। [15]उनका कहना था, “समय पूरा हो चूका है, परमात्मा का साम्राज्य नज़दीक आ गया है। अपने बुरे कर्मों से पश्चाताप करो और शुभ संदेश पर विश्वास करो!”

[16]प्रभु येशु गलील की झील के किनारे टहल रहे थे। वहाँ उन्होंने शिमोन पतरस और उसके भाई अंदरियास को मछली पकड़ने के लिए झील में जाल डालते देखा, क्योंकि वे मछुआरे थे। [17]गुरु येशु ने उनसे कहा, “आओ, मेरे शिष्य बनो। तुम्हारा काम मछली पकड़ना रहा है। लेकिन अब मैं तुम्हें लोगों को परमात्मा की शरण में लाना सिखाऊँगा।” [18]वे दोनों तुरंत ही अपने जालों को छोड़कर उनके साथ चल पड़े।

[19]कुछ आगे बढ़ने पर गुरु येशु ने ज़बदियाह के पुत्र याकोब और उसके भाई योहन को देखा। वे नाव में जाल को ठीक कर रहे थे। [20]गुरु येशु ने उन्हें तुरंत अपने पास बुलाया। वे दोनों भाई अपने पिता ज़बदियाह को मज़दूरों के साथ नांव में छोड़ कर गुरु येशु के शिष्य बनकर उनके साथ चल पड़े।

प्रभु येशु ने एक आदमी को अशुद्ध आत्मा से मुक्त किया

[21]तब प्रभु येशु और उनके शिष्य कफरनहूम शहर में आए और प्रभु येशु आराम-दिवस के मौके पर यहूदी सत्संग भवन में जाकर उपदेश

देने लगे। [22]लोग उनकी शिक्षा पर हैरान हुए, क्योंकि उनकी शिक्षाएँ धर्मगुरुओं की शिक्षाओं के समान नहीं थीं। प्रभु येशु की शिक्षाएँ शक्ति और अधिकार से भरी थीं।

[23]उसी समय एक आदमी जिसमें अशुद्ध आत्मा थी, यहूदी सत्संग भवन में आकर चिल्ला उठा, [24]"हे नासरत-निवासी येशु, आपका और हमारा क्या लेना-देना? क्या आप हमें नष्ट करने आए हैं? मैं जानता हूँ कि आप कौन हैं, परमात्मा के पवित्र इंसान हैं!"

[25]प्रभु येशु ने अशुद्ध आत्मा को डाँटकर कहा, "चुप रह और इस मनुष्य में से निकल जा!" [26]अशुद्ध आत्मा उस मनुष्य को मरोड़ते हुए और चिल्लाते हुए उसमें से निकल गई।

[27]इस पर सब लोग हैरान रह गए और आपस में कहने लगे, "यह कौन हैं? यह अधिकार के साथ शिक्षा देते हैं और अशुद्ध आत्माओं को निकल जाने की आज्ञा देते हैं और वे उनकी आज्ञा मान लेती हैं।" [28]प्रभु येशु का नाम जल्दी ही गलील प्रदेश में सब जगह फैल गया।

बिमारों और अशुद्ध आत्माओं से जकड़े लोगों को ठीक करना

[29]गुरु येशु और उनके शिष्य यहूदी सत्संग भवन से निकलकर सीधे शिमोन और अंदरियास के घर गए। याकोब और योहन उनके साथ थे। [30]वहाँ शिमोन की सास बुखार में पड़ी थी। जो लोग वहाँ थे उन्होंने बिना देर किए बीमार महिला के बारे में प्रभु येशु को बताया। [31]प्रभु येशु आए और शिमोन की सास का हाथ पकड़कर उसे उठाया। उसका बुखार उतर गया और वह सब की सेवा करने लगी।

[32]शाम के समय सूरज डूबने पर लोग सब बीमारों और अशुद्ध आत्मा से जकड़े लोगों को प्रभु येशु के पास लाने लगे। [33]सारा नगर घर के दरवाज़े पर इकट्ठा हो गया। [34]तब प्रभु येशु ने अलग-अलग बीमारियों से परेशान लोगों को ठीक किया और अनेक अशुद्ध आत्माओं को लोगों में से निकाला। अशुद्ध आत्माओं को पता था कि प्रभु येशु कौन हैं, लेकिन प्रभु येशु ने अशुद्ध आत्माओं को बोलने नहीं दिया।

गाँव-गाँव घूमकर प्रभु येशु का प्रवचन सुनाना

[35]सुबह, जब अँधेरा ही था, प्रभु येशु उठे और घर से बाहर निकलकर प्रार्थना करने के लिए किसी सुनसान जगह में चले गए। [36]उधर शिमोन और उसके साथी उनको ढूँढ़ रहे थे। [37]जब प्रभु येशु उन्हें मिले तब वे उनसे बोले, “सब लोग आपको ढूँढ़ रहे हैं।”

[38]प्रभु येशु ने कहा, “आओ, हम पास के गाँवों में चलें कि मैं वहाँ भी लोगों को प्रवचन सुनाऊँ, क्योंकि मैं इसी मकसद से आया हूँ।” [39]तब प्रभु येशु गलील प्रदेश के सब यहूदी सत्संग भवनों में गए, जहाँ उन्होंने शुभ संदेश सुनाया और लोगों में से अशुद्ध आत्माओं को निकाला।

कोढ़ी को प्रभु येशु ने छूकर ठीक किया

[40]एक कोढ़ी प्रभु येशु के पास आया और घुटने टेककर+ कहने लगा, “प्रभु, यदि आप की कृपा हो जाए तो मैं कोढ़ से शुद्ध हो जाऊँगा।”

[41]प्रभु येशु ने दया से+ भरकर अपना हाथ बढ़ाया और उसे छूकर कहा, “मेरी कृपा तुम पर हो गई है। तथास्तु।” [42]और तुरंत उसका कोढ़ दूर हो गया और वह शुद्ध हो गया। [43]तब प्रभु येशु ने तुरंत उसको जाने को कहा और यह सख्त चेतावनी दी, [44]“इसके बारे में किसी से कुछ न कहना, पर जाओ, अपने आपको पुरोहित को दिखाओ और परमात्मा के प्रवक्ता मोशे के आदेश के अनुसार मंदिर में भेंट अर्पित करो,* जिससे लोगों को यह मालूम हो जाए कि तुम कोढ़ से ठीक हो गए हो।” [45]परंतु बाहर जाकर उसने खुल कर बहुत से लोगों को इस घटना के बारे में बताया। इसका परिणाम यह हुआ कि प्रभु येशु नगरों में आसानी से नहीं जा सके, परंतु सुनसान जगहों में रहे। फिर भी हर जगह से लोग उनके पास आते रहे।

2

कौन बुरे कर्मों के खाते को मिटा सकता है?

[1]कुछ दिन बाद जब प्रभु येशु फिर कफरनहूम शहर में आए तब यह समाचार फैल गया कि वह घर में हैं। [2]उनके घर में इतने लोग इकट्ठे

---

* **1:44** *कोढ़* - जिस व्यक्ति को कोढ़ होता था उसे यहुदी रीति के अनुसार अशुद्ध घोषित करके समाज से अलग रहने को कहा जाता था।

हो गए कि दरवाज़े के सामने भी जगह नहीं रही। जब प्रभु येशु उन्हें परमात्मा का संदेश सुना रहे थे, [3]तब उस समय चार लोग एक लकवा मारे बीमार को चटाई पर उठाकर प्रभु येशु के पास लाए। [4]परंतु जब लोगों की भीड़ के कारण उस बीमार को अंदर लाने का कोई उपाय न सूझा, तो वे छत पर चढ़ गए और उन्होंने कच्ची छत में छेद करके बिमार व्यक्ति को चटाई के साथ प्रभु येशु के सामने नीचे उतार दिया। [5]प्रभु येशु ने उसकी और उसके दोस्तों की आस्था देखी तो वह लकवा मारे बीमार से बोले, “मेरे पुत्र, तुम्हारे बुरे कर्मों के खाते को मिटा दिया गया है।”

[6]वहाँ कुछ धर्मगुरु बैठे हुए थे और वे मन में सोचने लगे, [7]“यह मनुष्य ऐसा क्यों कह रहा है? यह तो परमात्मा का अपमान करता है। परमात्मा के अलावा और कौन है जो बुरे कर्मों के खाते को मिटा सकता है?”

[8]उसी समय प्रभु येशु जान गए कि वे क्या सोच रहे हैं, और उनसे बोले, “तुम अपने मन में ऐसा क्यों सोच रहे हो? [9]मेरे लिए लकवा मारे व्यक्ति से क्या कहना ज़्यादा आसान है, ‘तुम्हारे बुरे कर्मों का खाता मिट गया’ या ‘उठो, अपनी चटाई उठाओ और चलो-फिरो?’ [10]मैं चाहता हूँ कि तुम लोग समझ जाओ कि तेजस्वी मानव-पुत्र को पृथ्वी पर बुरे कर्मों के खाते को मिटाने का भी अधिकार है।” तब उन्होंने बीमार से कहा, [11]“मैं तुमसे कहता हूँ, उठो! अपनी चटाई उठाओ और अपने घर जाओ!”

[12]वह उठा और तुरंत अपनी चटाई उठाकर उन सबके देखते-देखते वहाँ से चला गया। इस पर सब हैरान रह गए और परमात्मा का गुणगान करते हुए कहने लगे, “ऐसा हमने कभी नहीं देखा!”

प्रभु येशु पापियों के डॉक्टर हैं

[13]प्रभु येशु फिर बाहर निकलकर झील के किनारे गए। बहुत लोग उनके पास आने लगे और प्रभु ने उन्हें प्रवचन दिया। [14]रास्ते में प्रभु येशु ने हलफियस के पुत्र लेवी को जो टैक्स लेने वाला था टैक्स चौकी पर बैठे देखा और उससे कहा, “आओ, मेरे शिष्य बनो।” लेवी खड़ा हो गया और प्रभु येशु के साथ चल पड़ा।

[15]गुरु येशु और उनके शिष्यों को लेवी ने अपने घर भोजन करने के लिए बुलाया। जब वे भोजन करने बैठे तब अनेक टैक्स लेने वाले और पापी लोग भी भोजन में शामिल थे क्योंकि बहुत से ऐसे लोग प्रभु येशु के शिष्य बन गए थे। [16]जब कुछ यहूदी धर्मगुरुओं और फरीसी धार्मिक पंथ के लोगों ने गुरु येशु को पापियों और टैक्स लेने वालों के साथ भोजन करते देखा तो गुरु येशु के शिष्यों से बोले, “तुम्हारे गुरु टैक्स लेने वालों और पापियों के साथ क्यों खाते-पीते हैं?”

[17]प्रभु येशु ने उनकी बात सुनकर कहा, “स्वस्थ लोगों को डॉक्टर की ज़रूरत नहीं होती, पर बीमारों को होती है। मैं नेक लोगों को नहीं परंतु पापियों को अपना शिष्य बनाने के लिए आया हूँ।”

उपवास रखने का सही समय कौन सा है?

[18]एक समय समर्पण-स्नान दाता योहन के शिष्य और फरीसी के शिष्य उपवास कर रहे थे। कुछ लोगों ने आकर प्रभु येशु से पूछा, “योहन के शिष्य और फरीसियों के शिष्य उपवास कर रहे हैं, फिर आपके शिष्य क्यों नहीं करते?”

[19]प्रभु येशु ने उनसे कहा, “जब मेहमान दूल्हे के साथ शादी में होते हैं तो वे उपवास के बारे में सोचते भी नहीं हैं। जब तक दूल्हा साथ है, उपवास नहीं होता। [20]पर समय आएगा जब दूल्हा उनसे ले लिया जाएगा, तब उस दिन, वे उपवास करेंगे।

[21]“कोई भी नए कपड़े का टुकड़ा पुराने कपड़े में नहीं लगाता। यदि लगाए तो नया टुकड़ा पुराने कपड़े को फाड़ देगा और पुराना कपड़ा पहले से भी अधिक फट जाएगा। [22]इसी प्रकार नए अंगूर-रस को कोई पुरानी सख्त मश्कों में नहीं रखता है। यदि वह इसे रखेगा तो नया अंगूर-रस झाग के साथ उफनता जाएगा और पुरानी सख्त मश्कों को फाड़ देगा और अंगूर-रस बाहर निकल जाएगा और मश्कें किसी काम की नहीं रहेंगी। नए अंगूर-रस को नयी, नरम और लचीली मश्कों में रखा जाना चाहिए!”+

धार्मिक नियमों के प्रति प्रभु येशु का नज़रिया

[23]एक आराम-दिवस के मौके पर प्रभु येशु अपने शिष्यों के साथ खेतों में से होकर जा रहे थे। उनके शिष्य चलते-चलते अनाज के दानें

तोड़ने लगे। [24]कुछ फरीसियों ने प्रभु येशु से पूछा, “आपके शिष्य आराम-दिवस पर अनाज की बालें क्यों तोड़ रहे हैं? आराम-दिवस पर ऐसा करना मोशे के नियम और शिक्षा के विरुद्ध है!”

[25]प्रभु येशु ने उनसे कहा, “क्या तुमने परमात्मा-ग्रंथ में नहीं पढ़ा कि राजा दाविद और उसके साथियों को जब भूख लगी और वे भोजन की तलाश में थे, तब राजा दाविद ने क्या किया था? [26]राजा दाविद महापुरोहित अबियातार के समय में, परमात्मा के पवित्र स्थान के आँगन में गया फिर राजा दाविद और उनके साथियों को परमात्मा को अर्पित भेंट की रोटियाँ दीं गई, उन्होंने वे रोटियाँ खाईं, जो पुरोहित के अलावा किसी और को खाने की मनाही थी।”

[27]तब प्रभु येशु ने यह कहा, “आराम-दिवस लोगों की भलाई के लिए बनाया गया है, न कि लोग आराम-दिवस की भलाई के लिए। [28]इसलिए तेजस्वी मानव-पुत्र आराम-दिवस का भी मालिक है।”

3

हाथ में लकवा मारे व्यक्ति का ठीक होना

[1]गुरु येशु फिर यहूदी सत्संग भवन में गए। वहाँ एक मनुष्य था जिसके हाथ में लकवा मार गया था। [2]कुछ फरीसी धार्मिक पंथ के लोग इस ताक में थे कि प्रभु येशु उसे आराम-दिवस के मौके पर स्वस्थ करें ताकि उन्हें उनकी गलती पकड़ने का मौका मिल जाए।

[3]प्रभु येशु ने हाथ में लकवा मारे मनुष्य से कहा, “उठो, सबके बीच में खड़े हो जाओ ताकि सब तुम्हें देख सकें।” [4]फिर उन्होंने लोगों से पूछा, “मोशे के नियम और शिक्षा के अनुसार, क्या आराम दिवस पर किसी की मदद करना ठीक है या फिर लोगों को उनके दुखो में छोड़ देना सही है?” लोगों के मुँह बंद हो गए।

[5]जब प्रभु येशु ने वहाँ के लोगों का व्यवहार देखा, तो वह गुस्सा हुए, लेकिन वह दुखी भी थे क्योंकि उनके दिल पत्थर की तरह थे। उन्होंने उस मनुष्य से कहा, “हाथ बढ़ाओ।” उसने हाथ बढ़ा दिया और उसका लकवा मारा हाथ बिल्कुल ठीक हो गया। [6]तब फरीसी पंथी बाहर निकले और तुरंत राजा हेरोदेस दल के लोगों के साथ प्रभु येशु की हत्या की साज़िश करने लगे।

प्रभु येशु को छूने के लिए भीड़ उमड़ी

[7-8]गुरु येशु अपने शिष्यों के साथ झील की ओर निकल गए। तब गलील प्रदेश, यहूदिया प्रदेश और यरूशलम शहर से बड़ी भीड़ उनके पीछे आई। लोग इदूमिया देश से और साथ ही यरदन नदी के पूर्व में अन्य स्थानों से भी आए थे। वे सोर और सीदोन के शहरों के आस-पास के क्षेत्र से भी आए थे। प्रभु येशु के कामों के बारे में सुनकर इन अलग-अलग जगहों से यह भीड़ वहाँ आई थी। [9]तब गुरु येशु ने अपने शिष्यों से कहा, “कहीं यह भीड़ मुझे कुचल न दे, इसलिए इनसे बचने के लिए एक नाव मेरे लिए तैयार रखो।”

[10]प्रभु येशु ने वहाँ बहुत बीमारों को ठीक किया था और भीड़ में से दूसरे बीमार लोगों ने भी स्वस्थ होने के लिए उन्हें छूने की कोशिश की। [11]अशुद्ध आत्माएँ भी जब प्रभु येशु को देखतीं तो उनके सामने गिर पड़तीं और चिल्ला कर कहती थीं, “आप परमात्मा के पुत्र हैं!” [12]पर वह अशुद्ध आत्माओं को डाँटकर कहते थे, “लोगों को मत बताना मैं कौन हूँ।”

गुरु येशु के राजदूतों को अशुद्ध आत्मा निकालने का भी अधिकार

[13]गुरु येशु ने अपने कुछ शिष्यों को अपने साथ पहाड़ पर चलने के लिए कहा और शिष्य उनके साथ चल दिए। [14-15]उस समय उन्होंने बारह शिष्यों को नियुक्त किया और उन्हें “राजदूत” नाम दिया+ कि वे उनके साथ रहें। उन्होंने राजदूतों को अशुद्ध आत्माओं को निकालने का अधिकार दिया और परमात्मा के शुभ संदेश को फैलाने के लिए भी भेज दिया। [16]प्रभु येशु ने इन बारह को नियुक्त किया, शिमोन जिसका नाम प्रभु ने “पतरस” रखा, [17]ज़बदियाह के पुत्र याकोब और योहन जिन्हें प्रभु येशु “बोनेरगेस” कहकर बुलाते थे (“बोनेरगेस” का अर्थ है “गर्जन के पुत्र”), [18]अंदरियास, फिलिपस, बरतोलोमै, मत्तियाह, थोमस, हलफियस का पुत्र याकोब, थदयस, शिमोन जो “देशभक्त” कहलाता है [19]और यहूदा इस्करियोत जिसने प्रभु येशु को धोखा दिया।

पवित्र आत्मा की निंदा की माफ़ी नहीं

[20]जब प्रभु येशु किसी के घर में थे, तो वहाँ फिर से इतनी बड़ी भीड़ जमा हो गई कि उनको खाने तक का समय नहीं मिला।

[21]जब प्रभु येशु के परिवार ने सुना कि वह क्या कर रहे हैं, तो उन्होंने सोचा कि वह पागल हैं तो वह उन्हें लेने के लिए वहाँ गए।

[22]यरूशलम से आए हुए धर्मगुरुओं ने कहा, “उसमें बालज़बूल है और वह उसी की सहायता से अशुद्ध आत्माओं को निकालता है।”

[23]प्रभु येशु ने लोगों को अपने पास बुलाया और ये उदाहरण दिए, “शैतान अपने आप को ही कैसे निकाल सकता है? [24]यदि किसी देश में फूट पड़ जाए तो उस देश का अंत जल्दी ही हो जाएगा। [25]यदि किसी घर में फूट पड़ जाए तो उस घर का अंत जल्दी ही हो जाएगा। [26]इसलिए अगर शैतान अपने ही खिलाफ लड़ता है, तो उसके शासन का अंत जल्द ही हो जाएगा। [27]कोई मनुष्य ताकतवर के घर में घुसकर उसका पैसे तब तक नहीं लूट सकता जब तक कि वह पहले उस ताकतवर को बाँध न ले। इसके बाद ही वह उसके घर को लूट सकेगा।”

[28-30]क्योंकि कुछ लोगों ने कहा था कि प्रभु येशु में अशुद्ध आत्मा है, प्रभु येशु इसलिए बोले, “मैं तुमसे सच कहता हूँ, सब पापों और सब प्रकार की निंदा की माफी मिलेगी। पर परमात्मा की पवित्र आत्मा के विरुद्ध निंदा करने वाले को कभी माफ़ी नहीं मिलेगी। इसका परिणाम अनंत काल तक भुगतना होगा।”

प्रभु येशु का बड़ा आत्मिक परिवार

[31]तब प्रभु येशु की माता और भाई आ पहुँचे और घर के बाहर खड़े होकर उन्हें बुलवा भेजा। [32]जो लोग प्रभु येशु के चारों ओर बैठे थे उन्होंने प्रभु येशु को बताया, “देखिए, आपकी माता और भाई और बहन+ बाहर आपसे मिलने आए हैं।”

[33]प्रभु येशु ने उत्तर दिया, “मैं तुम्हें बताता हूँ कौन मेरी माता और मेरे भाई हैं।” [34]फिर आसपास चारों ओर बैठे हुए लोगों पर नज़र डाली और बोले, “देखो, ये भी तो मेरी माता और मेरे भाई हैं। [35]जो लोग वही करते हैं जो परमात्मा चाहते हैं, वे ही मेरे भाई, बहन हैं और माता है।”

4

चार प्रकार की भूमि

[1]प्रभु येशु फिर झील के किनारे पर शिक्षा देने लगे तो उनको सुनने के लिए इतनी बड़ी भीड़ जमा हो गई कि उन्हें झील में नाव पर चढ़कर बैठना पड़ा, और सब लोग झील के किनारे पर खड़े रहे। [2]गुरु येशु कहानियों द्वारा उन्हें अनेक शिक्षाएँ देने लगे। उन्होंने कहा, [3]"सुनो, एक किसान खेत में बीज बिखेरने निकला। [4]बिखेरते समय कुछ बीज रास्ते के किनारे गिरे और पक्षी आकर उन्हें चुग गए। [5]कुछ बीज पथरीली भूमि पर गिरे जहाँ उन्हें बहुत मिट्टी न मिली। वे जल्दी ही उग गए। [6]पर जब सूरज निकला तो पौधे गहरी जड़ न होने के कारण सूरज के ताप से झुलस गए। [7]कुछ बीज कँटीली झाड़ियों में गिरे, पर झाड़ियों ने बढ़कर उनको घेर कर ढांप लिया और उनमें गेहूँ न उग सका। [8]परंतु कुछ बीज अच्छी भूमि पर गिरे, और जब वे उगकर बढ़े तो भारी मात्रा में गेहूँ हुआ। और जितने बीज बोये थे उसके मुकाबले कोई तीस गुना, कोई साठ गुना और कोई सौगुना गेहूँ उगा।"

[9]तब प्रभु येशु ने कहा, "जिसके कान खुले हों, वह सुन ले!"

मन से देखना और समझना परमात्मा को भाता है

[10]जब गुरु येशु एकांत में थे तब उनके शिष्यों और बारह राजदूतों ने उनसे इन कहानियों का अर्थ पूछा। [11]प्रभु येशु ने कहा, "परमात्मा के साम्राज्य की गुप्त बातों की समझ तुम्हें दी गई है, पर दूसरों को, जो समझते नहीं हैं, उन्हें मैं हर एक बात कहानी के रूप में बताता हूँ, क्योंकि

[12] 'वे देखते हुए भी मन की आँखों से नहीं देख पाते हैं
    और सुनते हुए भी मन से समझ नहीं पाते हैं।
  यदि वे मन से देख और समझ पाते,
    तो वे पश्चाताप करते
    और परमात्मा उनके बुरे कर्मों के खाते को मिटा देते।'"

4:12 यशायाह 6:9-12

चार प्रकार की भूमि का अर्थ समझाना

[13]गुरु येशु ने उनसे कहा, “यदि तुम यह कहानी नहीं समझे, तो अन्य सब कहानियाँ कैसे समझोगे? [14]किसान जो बिखेर रहा है वह वास्तव में परमात्मा का संदेश है। [15]रास्ते पर गिरे बीज उन लोगों के समान हैं जो परमात्मा का संदेश सुनते हैं, लेकिन शैतान जल्द ही आता है और उनसे यह छीन लेता है। [16]पथरीली भूमि पर गिरे बीज उन लोगों के समान हैं जो परमात्मा के संदेश को खुशी से सुनते हैं और तुरंत उसको अपना भी लेते हैं, [17]पर उनकी जड़ें गहरी नहीं होतीं, इसलिए संदेश थोड़े समय तक ही उनके मन में रह पाता है। जैसे ही जीवन में कठिनाइयाँ आती हैं या परमात्मा के संदेश का पालन करने के कारण लोग उन्हें परेशान करते हैं, वे आस्था से पीछे हट जाते हैं। [18]झाड़ियों में गिरे बीज उन लोगों के समान हैं जो परमात्मा का संदेश सुनते हैं, [19]पर संसार की चिंताओं के शोर, धनी बनने के जाल में फंसकर और अन्य इच्छाओं के कारण संदेश को नज़र अंदाज़ कर देते हैं, इसलिए उनमें कोई फल पैदा नहीं हो पाते हैं। [20]अच्छी भूमि पर गिरे बीज उन लोगों के समान हैं जो संदेश सुनते हैं और उसको मन में बसा लेते हैं। वे तीस गुना, साठ गुना और सौ गुना फल पैदा करते हैं।”

गुप्त चीज़ों के राज़ खुल जाएँगे

[21]प्रभु येशु ने उनसे कहा, “क्या तुम दीपक को इसलिए जलाते हो कि उसे टोकरी या चारपाई के नीचे रखें? क्या तुम उसे ऊँची जगह पर नहीं रखते? [22]ऐसी कोई चीज़ नहीं है, जो छिपी हो और लोगों के सामने लाई न जाए और ऐसा कोई राज़ नहीं जो खोला न जाएगा। [23]जिसके कान खुले हो वह सुन ले!”

[24]गुरु येशु ने उनसे यह भी कहा, “जो कुछ तुम सुनते हो, उसे ध्यान से सुनो। जिस तराज़ू से तुम तौलते हो उसी से तुम्हारे लिए भी तौला जाएगा, परंतु उससे भी ज़्यादा तौल कर तुम्हें दिया जाएगा। [25]क्योंकि जिसके पास है, उसे और दिया जाएगा और जिसके पास नहीं है, उससे वह भी ले लिया जाएगा जो उसके पास है।”

बीजों द्वारा परमात्मा के साम्राज्य को समझाना

[26]फिर प्रभु येशु ने कहा, “परमात्मा का साम्राज्य कुछ ऐसा है जब एक किसान बीज बिखेरने खेत में जाता है तो क्या होता है। [27]चाहे

किसान सोए या जागे खेत में बीज बढ़ता जाता है। वह नहीं जानता कि ऐसा कैसे होता है। [28]भूमि अपने आप उगाती है, पहले अंकुर, फिर बालें और फिर बालों में पूरे पके दाने। [29]पर ज्यों ही अनाज पकता है, किसान आकर उसे हँसिया से काटना शुरू कर देता है, क्योंकि कटनी का समय आ पहुँचा है।”

[30]प्रभु येशु ने यह भी कहा, “परमात्मा के साम्राज्य की तुलना किस से करें? किस कहानी द्वारा हम उसके बारे में बताएँ? [31]परमात्मा का साम्राज्य राई के बीज के समान है। जब राई का बीज भूमि में बोया जाता है तब सब बीजों में सबसे छोटा होता है, [32]परंतु बोए जाने पर वह उगता है और बाग के सारे पौधों से बड़ा हो जाता है। उसमें बड़ी-बड़ी शाखाएँ निकल आती हैं यहाँ तक कि आकाश के पक्षी उसकी छाया में बसेरा करते हैं।”

[33]ऐसी अनेक कहानियों के द्वारा प्रभु येशु लोगों की बुद्धि के अनुसार अपना संदेश सुनाते थे। [34]वह कहानियों के बिना लोगों को कोई शिक्षा नहीं दिया करते थे। और जब वह अपने शिष्यों के साथ अकेले होते थे तो कहानियों का अर्थ समझा देते थे।

तूफान और आस्था का सम्बन्ध

[35]उस दिन शाम होने पर गुरु येशु ने शिष्यों से कहा, “आओ, हम झील के उस पार चलें।” [36]शिष्य भीड़ का साथ छोड़ कर प्रभु येशु को, नाव पर साथ ले चले। अन्य नावें भी उनके साथ थीं। [37]तब आँधी चलने लगी और लहरें नाव से टकराने लगीं और लहरों का पानी नाव में भरने लगा। [38]पर गुरु येशु नाव के पिछले भाग में तकिया लगाए सो रहे थे। शिष्यों ने उनको जगाया और कहा, “हे गुरुजी, आपको कुछ भी चिंता नहीं कि हम मरने वाले हैं?”

[39]गुरु येशु उठ बैठे और तूफान को डाँटकर लहरों से कहा, “शांत हो जा, थम जा!” तेज हवा धीमी हो गई और बड़ी शांति छा गई। [40]फिर प्रभुजी शिष्यों से बोले, “तुम इतने घबराए हुए क्यों हो? क्या परमात्मा में तुम्हारी आस्था नहीं है?”

[41]शिष्य डर गए और आपस में कहने लगे, “यह कौन हैं कि तूफान और लहरें भी इनकी आज्ञा मानते हैं?”

5

खतरनाक मनुष्य का जीवन बदला

[1]प्रभु येशु और उनके शिष्य झील के पास गिरासेनियों+ के इलाके में आए। [2]प्रभु येशु जैसे ही नाव से उतरे तो अशुद्ध आत्मा से जकड़ा हुआ एक आदमी था जो कब्रिस्तान में रहता था, उनके सामने आया। [3-4]उसमें इतनी ताकत थी कि कोई उसे जंजीरों से बाँधकर भी नहीं रख सकता था। उसे कई बार बेड़ियों और ज़ंजीरों से बाँधा गया, पर उसने हर बार ज़ंजीरें तोड़ डालीं और बेड़ियों के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। [5]रात और दिन वह कब्रिस्तान या पहाड़ियों पर घूमता, चिल्लाता और खुद को पत्थरों से घायल करता रहता था।

[6]वह प्रभु येशु को दूर से देखकर दौड़ता हुआ आया और झुक कर उन्हें प्रणाम किया [7]और ऊँची आवाज़ में बोला, “हे येशु, परमेश्वर के पुत्र! मुझसे आपको क्या काम? परमेश्वर के नाम में आप वादा करें कि मुझे कष्ट नहीं देंगे!” [8]उस आदमी ने यह इसलिए कहा क्योंकि प्रभु येशु ने पहले ही अशुद्ध आत्मा को उससे बाहर निकल जाने के लिए कहा था।

[9]प्रभु येशु ने अशुद्ध आत्मा से पूछा, “तेरा नाम क्या है?”

उसने उत्तर दिया, “मेरा नाम ‘विशाल सेना’ है, क्योंकि हम संख्या में बहुत हैं।” [10]अशुद्ध आत्माओं ने गिड़गिड़ाकर कहा, “हमें इस इलाके से बाहर न भेजिए।”

[11]वहाँ पास ही पहाड़ पर सूअरों का बड़ा झुंड चर रहा था। [12]अशुद्ध आत्माओं ने प्रभु येशु से विनती कि की, “हमें सूअरों के अंदर जाने की आज्ञा दीजिए।”

[13]प्रभु येशु ने आज्ञा दे दी। अशुद्ध आत्माएँ आदमी में से निकलकर सूअरों में समा गईं, और लगभग दो हजार सूअरों का वह सारा झुंड टीले से नीचे झील की ओर भागा और उसमें डूब गया।

[14]चरवाहों ने, जो सूअरों को चरा रहे थे, नगर और गाँवों में जाकर यह सारी घटना सुना दी। तब लोग देखने आए कि क्या हुआ था। [15]जब वे प्रभु येशु के पास आए, तो उन्होंने उस आदमी को देखा, जिसमें कभी बहुत सी अशुद्ध आत्माएँ थीं। वह कपड़े पहने शांत मन से बैठा हुआ है, यह देख कर वे घबरा गए। [16]इस घटना को अपनी आँखों

से देखने वालों ने विस्तार से उन्हें बताया कि जिस मनुष्य में अशुद्ध आत्माएँ थीं, वह कैसे स्वस्थ हुआ और सूअर कैसे डूब गए। [17]तब लोग प्रभु येशु से विनती करने लगे कि वह उनकी जगह से चले जाएँ।

[18]जब प्रभु येशु नाव पर चढ़ रहे थे तब वह मनुष्य, जो पहले अशुद्ध आत्माओं से जकड़ा था, उनसे विनती करने लगा, “मुझे अपने साथ ले चलें।” [19]पर प्रभु येशु ने उसे मना कर दिया और उससे कहा, “अपने घर परिवार में जाओ और उन्हें बताओ कि प्रभु परमात्मा ने कैसे अपनी कृपा तुम पर बरसाई है।”

[20]तब वह आदमी “दस शहर” इलाके देकापोलिस में चला गया। इस इलाके में वे लोग रहते थे जो यहूदी नहीं थे। वहाँ उसने लोगों को बताया कि प्रभु येशु ने उसके लिए क्या-क्या किया है। यह सुनकर सब लोग हैरान रह गए।

मृत बच्ची और बीमार स्त्री का ठीक होना

[21]जब प्रभु येशु नाव से झील को पार करके दूसरी तरफ आए तब बड़ी भीड़ उनके पास इकट्ठा हो गई। [22]और याइरस नामक एक मनुष्य उनके पास आया, जो यहूदी सत्संग भवन का मुखिया था। वह प्रभु येशु को देखते ही उनके चरणों पर गिर पड़ा [23]और विनती करने लगा, “मेरी बेटी मरने पर है। कृपया चलिए और अपना हाथ उस पर रख दीजिए कि वह ठीक हो जाए और मरने से बच जाए।”

[24]प्रभु येशु याइरस के साथ चल दिए और एक बड़ी भीड़ उनके पीछे हो ली और लोग उन पर गिरे जा रहे थे। [25]भीड़ में एक स्त्री थी जो मासिक धर्म में अधिक खून बहने से पीड़ित थी और उसको ऐसा बारह साल से हो रहा था। [26]उसने अनेक डॉक्टरों को दिखाया था और अपना सारे पैसे खर्च कर देने पर भी उसे कुछ फायदा नहीं हुआ था, परंतु उसकी हालत बिगड़ती ही गई। [27]प्रभु येशु के बारे में सुनकर वह भीड़ में उनके पीछे से आई और उनके कपड़े को छुआ, क्योंकि वह सोचती थी, [28]“यदि मुझे उनका कपड़ा ही छूने को मिल जाए तो मैं ठीक हो जाऊँगी।” [29]जैसे ही उसने कपड़े को छुआ तुरंत उसका खून बहना बंद हो गया और उसने जान लिया कि वह ठीक हो गई है।

[30]उसी समय प्रभु येशु ने महसूस किया कि उनमें से शक्ति निकली है। इसलिए उन्होंने मुड़ कर पूछा, “मेरा कपड़ा किसने छुआ?”

[31]उनके शिष्यों ने कहा, “आप देख रहे हैं कि भीड़ आप पर गिरी जा रही है और इस पर भी आप पूछते हैं, ‘किसने मुझे छुआ?’”

[32]किंतु प्रभु येशु ने मुड़कर देखने की कोशिश की कि किसने उन्हें छुआ है। [33]वह स्त्री जानती थी कि उसके साथ क्या हुआ है। वह डरती-काँपती हुई आई और वह प्रभु येशु के चरणों में गिर पड़ी और सबकुछ सच-सच कह दिया। [34]प्रभु येशु बोले, “बेटी, तुम ने मुझ पर आस्था रखी इसलिए तुम ठीक हो गयी हो। सुखी रहो। अब तुम्हारे दुख दूर हो गए हैं।”

[35]प्रभु येशु यह कह ही रहे थे कि मुखिया याइरस के घर से लोगों ने आकर उससे कहा, “आपकी बेटी मर गई है। अब गुरुजी को कष्ट देने का कोई फायदा नहीं।”

[36]प्रभु येशु ने उनकी बात पर ध्यान नहीं दिया और याइरस से बोले, “चिंता मत करो, मुझपर भरोसा रखो।”

[37]पतरस और दो भाइयों, याकोब और योहन को छोड़कर प्रभु येशु ने किसी को भी अपने साथ आने नहीं दिया। [38]जब वे याइरस के घर पर पहुँचे तब प्रभु येशु ने देखा कि शोर हो रहा है और लोग रोते चिल्लाते हुए अपना शोक प्रकट कर रहे थे। [39]प्रभु येशु अंदर गए और लोगों से बोले, “क्यों रोते और शोर करते हो? बच्ची मरी नहीं परंतु सो रही है।”

[40]इस बात पर लोग उनका मज़ाक उड़ाने लगे। तब प्रभु येशु ने उन सबको घर से बाहर निकाल दिया और बच्ची के माता-पिता और अपने तीन शिष्यों को लेकर उस कमरे में गए जहाँ बच्ची थी। [41]वह बच्ची का हाथ पकड़कर अपनी मातृ भाषा में बोले, “तलीथा कूम!” जिसका अर्थ है “बच्ची, मैं तुझसे कहता हूँ, उठ!” [42]वह बच्ची, जो बारह साल की थी, उसी समय उठ बैठी और चलने-फिरने लगी। यह देखकर लोग बड़े हैरान हुए। [43]पर प्रभु येशु ने उन्हें सख्ती से आदेश दिया, “यह बात किसी को पता न चले।” तब उन्होंने कहा, “इसे कुछ खाने को दो।”

6

प्रभु येशु के अपने लोगों में आस्था की कमी

[1]प्रभु येशु उस स्थान से चले गए और शिष्यों के साथ अपने नगर नासरत में आए। [2]आराम-दिवस के मौके पर गुरु येशु यहूदी सत्संग भवन में उपदेश

देने लगे तो बहुत-से लोग उनके उपदेश सुनकर हैरान रह गए और कहने लगे, “इसे यह शिक्षा कहाँ से मिली? इसे ऐसा ज्ञान और इन चमत्कारों को करने की शक्ति कहाँ से मिली? [3]क्या यह वही बढ़ई नहीं जो मरियम का बेटा और याकोब, योसेस, यहूदा और शिमोन का भाई है? क्या इसकी बहनें हमारे बीच में नहीं रहतीं? तो फिर इसको हम अपना गुरु क्यों मानें?”

[4]प्रभु येशु ने उनसे कहा, “लोगों को अपने ही नगर और परिवार में पले-बढ़े व्यक्ति को परमात्मा के प्रवक्ता के रूप में स्वीकार करना मुश्किल होता है।” [5]इस कारण वहाँ वह बहुत से चमत्कारी काम न कर सके। उन्होंने केवल कुछ बीमार व्यक्तियों पर हाथ रखकर उन्हें ठीक किया। [6]लोगों की आस्था में कमी देखकर उन्हें बड़ी हैरानी हुई।

भक्तों का स्वागत करने से आशीर्वाद मिलता है

गुरु येशु प्रवचन देने के लिए गाँव-गाँव घूमने लगे। [7]तब उन्होंने अपने बारह राजदूतों को बुलाया और उन्हें अशुद्ध आत्माओं को निकालने का अधिकार देकर दो-दो करके अलग-अलग क्षेत्रों में भेजा। [8]गुरु येशु ने उन्हें आज्ञा दी, “जाते समय, लाठी के अलावा, कुछ साथ न ले जाना, न रोटी, न झोला, न बटुए में पैसे। [9]चप्पल पहनना परंतु रास्ते में बदलने के लिए कोई कपड़ा साथ न लेना।”

[10]उन्होंने आगे कहा, “जब कोई तुम्हें अपने घर में ठहराए तो नगर से विदा होने तक वहीं ठहरे रहना। [11]यदि किसी जगह पर तुम्हारा स्वागत न हो और लोग तुम्हारी बात न सुनें तो चलते समय उधर मुड़कर भी न देखना। यह उनके लिए एक चेतावनी होगी कि तुम्हारा स्वागत न करके उन्होंने एक गंभीर गलती की है।”

[12]तो गुरु येशु के राजदूत जाकर यह बताने लगे कि लोग अपने बुरे कर्मों से पश्चाताप करें और परमात्मा के रास्ते पर चलें। [13]और उन्होंने बहुत सी अशुद्ध आत्माओं को निकाला और बहुत से बीमार लोगों को ठीक किया और उन्हें जैतून का तेल से अभिषेख किया।

योहन का सिर काटा जाना

[14]प्रभु येशु इतने प्रसिद्ध हो गए थे कि राजा हेरोदेस ने भी उनके बारे में सुना। कुछ लोगों ने सोचा कि येशु समर्पण-स्नान दाता योहन हैं जो

चमत्कार करने की शक्ति के साथ फिर से ज़िन्दा हो गए हैं। [15]कुछ और लोगों का सोचना था, “यह परमात्मा के प्रवक्ता एलियाह हैं।” अन्य लोग कहते थे, “यह उन परमात्मा के प्रवक्ताओं में से एक हैं जो बहुत समय पहले रहा करते थे।”

[16]परंतु जब राजा हेरोदेस ने सुना तब उसने कहा, “यह योहन ही होगा जिसका सिर मैंने कटवाया था। वह मरे हुओ में से ज़िन्दा हो गया है।”

[17-18]राजा हेरोदेस ने कुछ समय पहले अपने भाई फिलिपस की पत्नी हेरोदियास से शादी की थी। लेकिन योहन ने उससे कहा, “तुम्हारे लिए अपने भाई की पत्नी से शादी करना सही नहीं है!” इसलिए हेरोदियास को खुश करने के लिए, राजा हेरोदेस ने योहन को गिरफ्तार किया और उसे जेल में डालवा दिया। [19]इस कारण हेरोदियास योहन से नफरत करती थी और उनकी हत्या करवाना चाहती थी। पर वह कुछ कर नहीं पाती थी, [20]क्योंकि राजा हेरोदेस योहन को नेक और पवित्र व्यक्ति मानता था। वह उनसे डरता था और उनकी हत्या न हो जाए इसलिए उनकी सुरक्षा करता था। अक्सर वह उनके प्रवचन सुनता और उनको सुनकर सोच में पड़ जाता था। वह योहन की बातें सुनना पसंद करता था।

[21]राजा हेरोदेस ने अपने जन्म-दिन पर दरबारियों, सेना के बड़े अधिकारियों और गलील के अमीर-अमीर लोगों को दावत में बुलाया जिससे उसकी पत्नी को मौका मिल गया। [22]उस दावत में हेरोदियास की बेटी ने अपना नाच दिखाकर हेरोदेस और उसके मेहमानों को खुश कर दिया। राजा ने लड़की से कहा, “तुम जो चाहो माँगो, मैं तुम्हें दूँगा। [23]मैं कसम खाता हूँ कि यदि तुम चाहो तो मैं तुमको अपने राज्य का आधा हिस्सा भी दे दूँगा।”

[24]वह बाहर गई और अपनी माँ से पूछा, “मैं क्या माँगूँ?”

उसने कहा, “समर्पण-स्नान देने वाले योहन का सिर।”

[25]वह तुरंत राजा के पास अंदर आई और कहा, “मैं चाहती हूँ कि आप अभी योहन का सिर कटवाकर एक थाल में मुझे दें।”

[26]राजा हेरोदेस ने जो कहा उसके लिए उसे बहुत पछतावा हुआ। लेकिन वह अपने मेहमानों के सामने किए गए वादे को तोड़ना नहीं चाहता था। [27]तुरंत राजा ने एक सैनिक भेजा कि वह योहन का सिर

काटकर ले आए। सैनिक ने जेल में योहन का सिर काटा [28]और थाल में लाकर लड़की को दिया और उसने अपनी माता को दे दिया। [29]जब योहन के शिष्यों ने यह सुना तब वे आए और उनका शव ले गए। उन्होंने उनके शव को शव रखने वाली गुफा में रख दिया।

पाँच रोटियों से गुरु हज़ारों लोगों का पेट भरते हैं

[30]जब प्रभु येशु के राजदूत उनके पास लौटे, तब उन्होंने प्रभु को सब कुछ जो उन्होंने किया था और जो कुछ लोगों को सिखाया था, बताया। [31]लेकिन इतने सारे लोग आ-जा रहे थे कि प्रभु येशु और राजदूतों को भोजन करने का मौका भी नहीं मिल रहा था। तब प्रभु येशु ने कहा, “चलो एक जगह चले जहाँ हम अकेले हो और कुछ आराम कर सकें।”

[32]इसलिए वे नाव में चुपचाप एकांत स्थान में चले गए। [33]परंतु लोगों ने उन्हें जाते हुए देख लिया और समझ गए कि वह कहाँ जा रहे हैं। वे नगरों से निकलकर दौड़-दौड़कर उस स्थान पर गुरु येशु और उनके शिष्यों से पहले ही पहुँच गए। [34]गुरु येशु ने नाव से उतरकर उस बड़ी भीड़ को देखा तो उनका मन दया से भर गया, क्योंकि ये लोग उन भेड़ों के समान थे जिनका कोई चरवाहा न हो। और वह उन्हें अनेक बातों की शिक्षा देने लगे।

[35]जब दिन बहुत ढल गया तब शिष्य उनके पास आए और बोले, “यह सुनसान जगह है और दिन बहुत ढल गया है। [36]लोगों को विदा कर दीजिए कि वे आसपास के कस्बों और गाँवों में जाएँ और अपने लिए कुछ खाने का इंतजाम करें।”

[37]परंतु प्रभु येशु ने उत्तर दिया, “तुम लोग ही इनके लिए खाने का इंतजाम करो।”

वे बोले, “क्या आप नहीं जानते इन सब के लिए खाना खरीदने में लगभग एक साल जितनी मज़दूरी है उतना पैसा* लगेगा?”

[38]प्रभु येशु ने पूछा, “तुम्हारे पास कितना खाना है? जाओ, देखो।”

*** 6:37** *लगभग एक साल जितनी मज़दूरी है उतना पैसा* - (या, “चाँदी के दो सौ सिक्के”) एक चाँदी का सिक्का एक पूरे दिन की मजदूरी के समान होता था।

वे गए और उन्होंने पता लगाकर गुरु येशु को बताया, “पाँच रोटी और दो मछली।”

[39]इस पर गुरु येशु ने शिष्यों को आज्ञा दी कि वे सब लोगों को हरी घास पर छोटे-छोटे समूहों में बैठा दें। [40]लोग पचास-पचास और सौ-सौ की लाइनों में बैठ गए।

[41]तब प्रभु येशु ने पाँच रोटी और दो मछली लीं, और ऊपर आकाश की ओर देखकर परमात्मा को धन्यवाद देकर रोटियों के टुकड़े किए और शिष्यों को दीं कि वे लोगों को परोसें। इसी प्रकार उन्होंने दोनों मछलियाँ भी सबमें बाँट दीं। [42]सबने पेट भर भोजन किया। [43]और शिष्यों ने बची हुई मछलियों और रोटियों को बारह टोकरों में भरा। [44]भोजन करने वाले पुरुषों की संख्या ही, महिलाओं और बालकों के अलावा, लगभग पाँच हजार थी।

प्रभ येशु का पानी पर चलना

[45]उसी समय गुरु येशु ने शिष्यों को नाव पर चढ़ने को कहा कि वे उनसे पहले झील के उस पार बैथसैदा नगर पहुँच जाएँ, और वह स्वयं लोगों को विदा करने के लिए पीछे रह गए। [46]जब वह लोगों को विदा कर चुके तब प्रार्थना करने के लिए पहाड़ी पर चले गए।

[47]रात हुई तो शिष्यों की नाव झील के बीच में थी और प्रभु येशु अकेले किनारे पर थे। [48]उन्होंने शिष्यों को देखा कि वे बड़ी कठिनाई से नाव चला रहे हैं क्योंकि हवा नाव से उलटी दिशा में बह रही थी। प्रभु येशु सुबह-सुबह झील पर चलकर उनकी ओर आए। वह उनसे आगे निकलने ही वाले थे। [49]पर शिष्यों ने उन्हें झील पर चलते देख लिया और समझा कि कोई भूत है, तो वे चिल्लाने लगे। [50]सब-के-सब उन्हें देखकर घबरा गए थे।

पर प्रभु येशु तुरंत उनसे बोले, “शांत रहो! मैं हूँ, डरो मत!”

[51]वह उनके पास नाव में चढ़ आए और हवा थम गई। शिष्य इस घटना को देखकर उलझन में पड़ गए। [52]वे इस घटना को और लोगों को रोटी खिलाने के चमत्कार को नहीं समझ पाए थे। ये सब बातें उनकी बुद्धि में समा नहीं पा रही थीं।

बहुत से लोग स्वस्थ होने के लिए आए

[53]झील पार करके प्रभु येशु और उनके शिष्य गनेसरत इलाके की सीमा में आए और नाव किनारे पर लगाई। [54]वे नाव से उतरने ही वाले थे कि लोगों ने प्रभु येशु को पहचान लिया। [55]उनके आने की सूचना देने के लिए लोग सारे इलाके में गए और जहाँ-जहाँ लोगों ने सुना कि प्रभु येशु आ गए हैं और प्रभु येशु जिधर भी जाते थे लोग उसी स्थान पर अपने बिमारों को चटाई पर उनके पास लाने लगे। [56]गाँवों में, नगरों में और बाहरी क्षेत्रों में जहाँ कहीं प्रभु येशु जाते, लोग बीमारों को चौराहों पर इकट्ठा कर प्रभु येशु के सामने ला कर कहते थे कि वह अपने कपड़ों का सिरा ही उन्हें छू लेने दें। जितनों ने प्रभु येशु के कपड़ों का सिरा छुआ, वे सब स्वस्थ हो गए।

7

खोखली परम्पराओं से कोई लाभ नहीं

[1]कुछ फरीसी धार्मिक पंथ के लोग और यरूशलम से आए हुए कुछ धर्मगुरु प्रभु येशु के पास इकट्ठे हुए। [2]उन्होंने देखा कि गुरु येशु के कुछ शिष्य यहूदी रीति के अनुसार हाथ धोए बिना भोजन कर रहे हैं। [3]फरीसी और सारे यहूदी लोग अपने पूर्वजों द्वारा दिए गए रीति-रिवाज़ों का पालन करते हुए, हाथ धोए बिना भोजन नहीं करते। [4]वे बाज़ार से आने पर, जब तक इस तरीके से हाथ धो न लें भोजन नहीं कर सकते थे। और भी ऐसी अनेक परंपराएँ हैं जिनका वे पालन करते हैं, उदाहरण के लिए कटोरों, लोटों और काँसे के बर्तनों को+ धोना-माँजना।

[5]फरीसी और धर्मगुरुओ ने प्रभु येशु से पूछा, “क्या कारण है कि आपके शिष्य हमारे पूर्वजों की परंपरा के अनुसार नहीं चलते, परंतु अशुद्ध हाथों से भोजन करते हैं?”

[6]प्रभु येशु ने उत्तर दिया, “ढोंगीयो, तुम्हारे बारे में परमात्मा के प्रवक्ता यशायाह ने सही भविष्यवाणी की थी जब उसने परमात्मा का यह संदेश लिखा था,

‘ये लोग होंठों से तो मेरा आदर करते हैं,
परंतु इनके मन मुझसे दूर हैं।

[7] वे व्यर्थ मेरी भक्ति करते हैं,
क्योंकि वे मनुष्य के द्वारा बनाए गए नियमों को सिखाते हैं।'"

[8] प्रभु येशु ने उनसे कहा, "तुम मनुष्यों की बनाई परंपरा का तो पालन करते हो किंतु परमात्मा की आज्ञा नहीं मानते। [9] अपनी परम्पराओं का पालन+ करने के लिए तुम कितनी चालाकी से परमात्मा की आज्ञा को टाल देते हो। [10] परमात्मा के प्रवक्ता मोशे का कहना है, 'अपने माता-पिता का आदर कर' और 'जो अपने माता-पिता के साथ बुरा व्यवहार करेगा उसे मौत की सज़ा मिलेगी।' [11] परंतु जो पैसे लोगों को अपने माता-पिता की देख भाल करने के लिए रखने चाहिए, तुम फरीसी उस पैसे को उन्हें परमात्मा को दान* के रूप में मंदिर में देने को कहते हो। [12] इस तरह जब वे अपने माता-पिता की देख भाल नहीं करते तो इस से तुम्हे कोई फर्क नहीं पड़ता। [13] तुम परमात्मा की आज्ञाओं को रद्द कर देते हो और इसके स्थान पर अपनी परंपराओं को मान्यता देते हो। ऐसे ही अनेक बुरे काम तुम करते हो।"

कौन सी चीज़ें लोगों को अशुद्ध करती है?

[14] प्रभु येशु ने लोगों को फिर अपने पास बुलाया और कहा, "तुम सब मेरी बात ध्यान से सुनो और समझो। [15-16] जो भोजन तुम अपने मुंह में डालते हो वह तुमको अशुद्ध नहीं बनाता है और न ही परमात्मा की भक्ति के लिए अयोग्य ठहराता है। तुम्हारे मुँह से निकली बुरी बातें तुमको अशुद्ध बनाती हैं।"

[17] जब गुरु येशु भीड़ के पास से घर के अंदर आए तब उनके शिष्यों ने इन बातों का मतलब पूछा। [18] प्रभु येशु ने उनसे कहा, "क्या तुम अब भी मेरी बातों का मतलब नहीं समझे कि जो भोजन तुम्हारे मुँह में जाता है वह तुम्हें अशुद्ध नहीं कर सकता? [19] क्योंकि खाना तुम्हारे मन में नहीं, परंतु पेट में जाता है और मल के द्वारा बाहर निकल जाता है।" इस प्रकार प्रभु येशु ने हर तरह के खाने को शुद्ध ठहराया।

[20] उन्होंने आगे कहा, "जो मनुष्य के मन से निकलता है, वही उसे अशुद्ध करता है। [21] क्योंकि मनुष्य के मन से बुरी-बुरी योजनाएँ

7:7 यशायाह 29:13 **7:10** निर्गमन 21:17; लेवी 20:9 * **7:11** *परमात्मा को दान* - या, अरामी भाषा में, "कोरबान"

निकलती हैं, अश्लील काम, चोरी, हत्या, [22]शादी के बाहर शारीरिक सम्बन्ध रखना, लालच, बुराई, धोखेबाज़ी, बुरी इच्छाएँ, जलन, बदनामी, घमंड और मूर्खता। [23]ये सब बुराइयाँ मन से निकलती हैं और लोगों को अशुद्ध करती हैं और परमात्मा की भक्ति के अयोग्य ठहराती हैं।”

प्रभु सबकी पुकार सुनते हैं

[24]तब प्रभु येशु उस स्थान को छोड़कर सोर और सीदोन के इलाकों में आए और एक घर में गए। वह नहीं चाहते थे कि लोगों को उनके आने के बारे में पता चले, परंतु किसी तरह लोगों को पता चल गया। [25]उसी समय एक स्त्री जिसकी बेटी में अशुद्ध आत्मा थी, प्रभु येशु के आने की खबर सुनकर उनके पास आई और उनके चरणों पर गिर पड़ी। [26]यह स्त्री यहूदी नहीं थी। उसका जन्म सीरिया-फिनीकी देश में हुआ था और वह ग्रीक भाषा बोलती थी।

उसने प्रभु येशु से विनती कि की वह उसकी बेटी में से अशुद्ध आत्मा निकाल दें।

[27]परंतु प्रभु येशु ने कहा, “पहले बच्चों को परोसा जाए, क्योंकि यह ठीक नहीं है कि बच्चों की रोटी लेकर कुत्तों के आगे डाली जाए।”

[28]स्त्री ने उत्तर दिया, “सच है प्रभु, लेकिन पालतू कुत्ते को भी तो बच्चों की मेज़ से गिरे खाने के टुकड़े नीचे मिल ही जाते हैं।”

[29]प्रभु येशु बोले, “तुमने ठीक कहा! अब तुम घर जा सकती हो। तुम्हारी बेटी से अशुद्ध आत्मा निकल गई है।” [30]जब वह स्त्री घर आई उसने देखा कि उसकी बेटी चारपाई पर लेटी हुई है और अशुद्ध आत्मा उसमें से निकल गई है।

बहरे और हकलाने वाले व्यक्ति को स्वस्थ करना

[31]सोर के इलाके से लौटने पर प्रभु येशु सीदोन के रास्ते से, गलील झील के किनारे “दस शहर” क्षेत्र में पहुँचे। [32]वहाँ लोग उनके पास एक मनुष्य को लाए, जो बहरा था और बोलते समय बहुत हकलाता था। उन्होंने प्रभु येशु से विनती की कि वह अपना हाथ उस पर रखें और उसे ठीक कर दें।

[33]प्रभु येशु उसे भीड़ से अलग ले गए और उसके कानों में अपनी अँगुली डाली और अपना थूक उसकी ज़ुबान पर लगाया। [34]फिर उन्होंने आकाश की ओर देखकर आह भरी और उस मनुष्य से कहा, “एफाथा,” जिसका अर्थ है “खुल जा।” [35]उस बहरे व्यक्ति के कान तुरंत खुल गए, उसकी ज़ुबान ठीक हो गई और उसका हकलाना बंद हो गया।

[36]प्रभु येशु ने लोगों को आदेश दिया कि यह बात किसी को न बताएँ, परंतु जितना ज़्यादा प्रभु येशु ने मना किया, उतना ही ज़्यादा लोगों ने इस बात को फैलाया। [37]लोग बहुत हैरान हुए और कहने लगे, “यह जो कार्य करते हैं अच्छा ही करते हैं। यह बहरे के कान और हकलाना ठीक कर देते हैं।”

8

सात रोटियों से हज़ारों ने पेट भर खाया

[1]उन दिनों जब फिर बड़ी भीड़ इकठ्ठा हो गई और लोगों के पास खाने को कुछ नहीं था, तो गुरु येशु ने अपने शिष्यों को बुलाकर उनसे कहा, [2]“मुझे इस भीड़ पर दया आती है। ये लोग तीन दिन से मेरे साथ हैं और इनके पास खाने को कुछ नहीं है। [3]यदि मैं इन्हें भूखा घर भेजूँ तो ये रास्ते में भूख से बेहोश हो जाएँगे। इनमें से कुछ तो बहुत दूर से आए हैं।”

[4]शिष्यों ने उत्तर दिया, “यहाँ इस सुनसान जगह में कौन कहाँ से इनके लिए खाने का इंतज़ाम कर सकता है?”

[5]प्रभु येशु ने पूछा, “तुम्हारे पास कितना खाना है?”

वे बोले, “सिर्फ सात रोटियाँ।”

[6]तब प्रभु येशु ने भीड़ को ज़मीन पर बैठने को कहा। उन्होंने सातों रोटियाँ लीं, परमात्मा का धन्यवाद करके उनके टुकड़े किए और अपने शिष्यों को दीं और उन्होंने रोटियों को भीड़ में बाँट दिया। [7]उनके पास कुछ छोटी मछलियाँ भी थीं। प्रभु येशु ने परमात्मा को धन्यवाद देकर उन्हें भी बाँटने को कहा।

[8]लोगों ने भर पेट खाना खाया और शिष्यों ने बचे हुए खाने को सात टोकरों में भरा। [9]भोजन करने वाले लोग लगभग चार हजार थे। प्रभु येशु

ने उन लोगों को विदा किया [10]और तुरंत नाव पर चढ़कर अपने शिष्यों के साथ दलमनूथा+ इलाके में आए।

प्रभु येशु को परखने के लिए सबूत की माँग

[11]फरीसी धार्मिक पंथ के लोग आए और प्रभु येशु से विवाद करने लगे और उनको परखने के लिए परमात्मा की शक्ति का* कोई सबूत माँगा।

[12]प्रभु येशु ने आह भरकर कहा, “इस पीढ़ी के लोग सबूत क्यों ढूँढ़ते हैं? मैं सच कहता हूँ, इस पीढ़ी को कोई सबूत नहीं दिया जाएगा।” [13]और वह उन लोगों को छोड़ कर फिर नाव में चढ़े और झील की दूसरी ओर चले गए।

खाने के बारे में चिंता से शिष्यों को डांट मिली

[14]शिष्य भोजन ले जाना भूल गए थे और नाव में उनके पास एक रोटी के अलावा और कुछ न था। [15]प्रभु येशु ने उनको चेतावनी देकर कहा, “मेरी बात ध्यान से सुनो! फरीसियों और राजा हेरोदेस की झूठी शिक्षा से अपने आप को बचाओ जो खमीर के समान है!”

[16]शिष्य आपस में विचार करने लगे, “हमारे पास रोटी नहीं है, इसलिए प्रभु येशु ने ऐसा कहा।”

[17]प्रभु येशु ने यह जानकर उनसे पूछा, “तुम इस सोच-विचार में क्यों पड़े हो कि तुम्हारे पास भोजन नहीं है? क्या तुम्हारी समझ में नहीं आता? क्या तुम्हारे दिमाग बंद हैं? [18]क्या तुम अंधे और बहरे हो? क्या तुमको याद नहीं है? [19]जब मैंने पाँच हज़ार लोगों को पाँच रोटी से भर पेट खिलाया था, तो तुमने बचे हुए खाने को कितने टोकरों में भरा था?”

उन्होंने उत्तर दिया, “बारह।”

[20]प्रभु येशु ने फिर पूछा, “और जब मैंने चार हज़ार लोगों को सात रोटियों से भर पेट खिलाया था तो बचे हुए खाने को कितने टोकरों में भरा था?”

---

* **8:11** *परमात्मा की* - या, “परमस्वर्ग की”

उन्होंने उत्तर दिया, “सात।”
[21]प्रभु येशु ने कहा, “क्या तुम अब भी नहीं समझ सके?”

प्रभु ने अद्‌भुत तरीके से अंधे को ठीक किया

[22]प्रभु येशु और उनके शिष्य बैथसैदा गाँव में आए। कुछ लोग प्रभु येशु के पास एक अंधे को लाए और उनसे विनती की कि वह उसे छू कर ठीक कर दें। [23]प्रभु येशु अंधे का हाथ पकड़कर उसे गाँव से बाहर ले गए। प्रभु येशु ने उसकी आँखों पर थूककर अपना हाथ उन पर रखा और उससे पूछा, “क्या तुम्हें कुछ दिखाई देता है?”

[24]उसने आँखें उठाकर कहा, “मुझे लोग दिखाई पड़ते हैं, पर वे ऐसे लगते हैं, मानों चलते-फिरते पेड़ हों।”

[25]तब प्रभु येशु ने फिर अपने हाथ उसकी आँखों पर रखें। अंधे की आँखें ठीक हो गईं, यहाँ तक कि दूर की चीजें भी उसे साफ-साफ दिखाई देने लगीं। [26]प्रभु येशु ने उससे कहा, “अब सीधे अपने घर लौट जाओ, वापस गाँव मत जाना।”+

प्रभु येशु का अपनी मृत्यु के बारे में पहली बार बताना

[27]गुरु येशु और उनके शिष्य कैसरया-फिलिपी शहर* के पास के गाँवों में गए। रास्ते में उन्होंने अपने शिष्यों से पूछा, “लोग मेरे बारे में क्या कहते हैं?”

[28]उन्होंने उत्तर दिया, “कुछ कहते हैं समर्पण-स्नान दाता योहन, अन्य कहते हैं परमात्मा के प्रवक्ता एलियाह और कुछ मानते हैं कि आप परमात्मा के प्रवक्ताओं में से एक हैं।”

[29]प्रभु येशु ने पूछा, “पर तुम मेरे बारे में क्या सोचते हो?”
पतरस ने उत्तर दिया, “आप मुक्तिदाता हैं!”

[30]इस पर प्रभु येशु ने शिष्यों को चेतावनी दी कि उनके बारे में किसी को न बताएँ।

[31]फिर गुरु येशु शिष्यों को यह शिक्षा देने लगे, “यह ज़रूरी है कि तेजस्वी मानव-पुत्र बहुत दुख उठाए। वह समाज के बड़ों, प्रधान

---

* **8:27** *कैसरया-फिलिपी शहर* - मत्तियाह 16:13 के नोट को देखें

पुरोहितों और धर्मगुरुओं द्वारा ठुकराया जाए, मार डाला जाए और तीन दिन बाद वह फिर ज़िन्दा हो जाए।” [32]प्रभु येशु ने अपनी बात का मतलब साफ-साफ बताया। इस पर पतरस ने उन्हें अलग ले जाकर उनको डाँटकर कहा, “आप इस तरह की बात मत कीजिए।”

[33]परंतु प्रभु येशु ने मुड़कर अपने शिष्यों की ओर देखा और पतरस को डाँटकर कहा, “मेरे सामने से हट, शैतान! तू वह सोच रहा है जो मनुष्य सोचता है न कि वह जो परमात्मा चाहते हैं।”

स्वार्थ-त्याग पर शिक्षा

[34]तब गुरु येशु ने भीड़ और अपने शिष्यों को अपने पास बुलाया और कहा, “यदि तुम मेरे शिष्य बनना चाहते हो, तो तुमको अपना अहम त्यागना होगा, अपना क्रूस उठाना होगा, और मेरे पीछे चलना होगा।* [35]जो कोई अपने जीवन को बचाना चाहता है, वह उसे गंवा देगा तथा जो कोई मेरे और शुभ संदेश के लिए अपने जीवन की हानि उठाता है, तो उसका जीवन सुरक्षित रहेगा। [36]यदि कोई सारे संसार का मालिक बन जाए परंतु उसे मोक्ष प्राप्त न हो तो उसे क्या लाभ? [37]क्या संसार में मोक्ष से बढ़कर और कोई बहुमूल्य चीज़ है? [38]यह पीढ़ी परमात्मा के प्रति वफादार नहीं है। यदि कोई व्यक्ति इस पापी पीढ़ी में मुझको और मेरी शिक्षा को लोगों के सामने स्वीकार नहीं करता है तब मैं मानव-पुत्र भी उस व्यक्ति को स्वीकार नहीं करूँगा जब मैं अपने पिता परमात्मा के तेज में पवित्र स्वर्गदूतों के साथ आऊँगा।”

9

[1]प्रभु येशु ने उनसे कहा, “मैं तुमसे सच कहता हूँ, यहाँ कुछ व्यक्ति खड़े हैं, वे तब तक नहीं मरेंगे जब तक परमात्मा के साम्राज्य को शक्ति सहित आया हुआ न देख लेंगे।”

*** 8:34** *अपना क्रूस उठाना होगा* - या, “सताए जाने और यहाँ तक कि मरने के लिए भी तैयार रहना होगा”

शिष्यों के सामने गुरु येशु का दिव्य-रूपांतर

[2]छः दिन बाद प्रभु येशु पतरस, याकोब और योहन को अपने साथ एकांत में एक ऊँचे पहाड़ पर ले गए। वहाँ उन शिष्यों के देखते-देखते प्रभु येशु का रूप बदल गया। [3]प्रभु येशु के कपड़े बहुत उज्जवल तथा इतने सफेद हो गए कि पृथ्वी पर कोई भी इतनी उज्जवल सफेदी नहीं ला सकता। [4]वहाँ शिष्यों को परमात्मा के प्रवक्ता मोशे और परमात्मा के प्रवक्ता एलियाह दिखाई दिए जो प्रभु येशु से बातें कर रहे थे।

[5]तब पतरस ने प्रभु येशु से कहा, “गुरुजी, हमारा यहाँ होना कितनी अच्छी बात है। आइए, हम तीन तम्बू के मंदिर बनाएँ, एक आपके लिए, एक मोशे के लिए और एक एलियाह के लिए।” [6]पतरस और अन्य शिष्य बहुत डर गए थे, इसलिए पतरस को समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या बोल रहा है।

[7]तब एक बादल ने उन्हें ढक लिया और बादल में से यह आवाज़ आई, “यह मेरा प्रिय पुत्र है, इसकी बात सुनो।” [8]तुरंत शिष्यों ने चारों तरफ नज़रें दौड़ाईं तो प्रभु येशु के अलावा कोई और दिखाई न दिया।

[9]पहाड़ से उतरते समय प्रभु येशु ने आदेश दिया, “जब तक तेजस्वी मानव-पुत्र मरे हुओं में से ज़िन्दा न हो जाए, तब तक यह जो तुमने देखा है, किसी को न बताना।” [10]इस बात को उन्होंने अपने तक ही रखा और विचार करने लगे कि “मरे हुओ में से ज़िन्दा होने” का क्या अर्थ है।

[11]शिष्यों ने प्रभु येशु से पूछा, “धर्मगुरु क्यों कहते हैं कि मुक्तिदाता के आने से पहले परमात्मा के प्रवक्ता एलियाह का आना ज़रूरी है?”

[12]प्रभु येशु ने कहा, “सच है, एलियाह सब कुछ तैयार करने के लिए पहले आएँगे। परंतु परमात्मा-ग्रंथ में तेजस्वी मानव-पुत्र के बारे में ऐसा क्यों लिखा गया है कि ‘वह बहुत दुख उठाएगा और ठुकराया जाएगा’? [13]मैं तुमसे कहता हूँ, एलियाह तो आ चुके हैं और जैसा कि उनके बारे में परमात्मा-ग्रंथ में लिखा है, ‘लोगों ने उनके साथ जैसा चाहा वैसा व्यवहार किया।’”

शिष्य क्यों अशुद्ध आत्मा को नहीं निकाल सके?

[14]जब गुरु येशु और उनके तीनों शिष्य वापस आए, तब देखा कि अन्य शिष्यों के चारों ओर भीड़ लगी है और धर्मगुरु उनसे बहस कर

9:12 यशायाह 53

रहे हैं। [15]प्रभु येशु को वहाँ देखकर भीड़ के सब लोग हैरान हुए और नमस्कार करने के लिए उनकी ओर दौड़े।

[16]प्रभु येशु ने पूछा, "तुम किस बात पर बहस कर रहे हो?"

[17]भीड़ में से किसी ने जवाब दिया, "गुरुजी, मैं आपके शिष्यों के पास अपने बेटे को लाया था जिसमें अशुद्ध आत्मा का वास है और उसने मेरे बेटे को गूँगा बना रखा है। [18]जब भी अशुद्ध आत्मा उसे पकड़ती है, पटक देती है। वह मुँह में झाग भर लाता, दाँत पीसने लगता और अकड़ जाता है। आपके शिष्यों से मैंने अशुद्ध आत्मा निकालने को कहा, परंतु वे उसे न निकाल सके।"

[19]प्रभु येशु ने कहा, "ओ यह पीढ़ी नास्तिकों से भरी है! कब तक मैं तुम्हारे साथ रहूँगा? कब तक मैं तुम्हें सहन करूँगा? उस लड़के को मेरे पास लाओ।"

[20]लोग लड़के को प्रभु येशु के पास लाए। प्रभु येशु को देखते ही गूँगा कर देने वाली आत्मा ने लड़के को बुरी तरह मरोड़ दिया और लड़का ज़मीन पर गिर पड़ा और मुँह से झाग निकालते हुए लोटने लगा।

[21]प्रभु येशु ने लड़के के पिता से पूछा, "इसकी ऐसी हालत कब से है?"

उसने कहा, "बचपन से। [22]इसे गूँगा कर देने वाली आत्मा ने कई बार आग में फेंका और कभी पानी में डुबोकर मारने की कोशिश की। यदि आप कुछ दया और सहायता कर सकते हैं, तो ज़रूर कीजिए।"

[23]प्रभु येशु ने उससे कहा, "क्या तुम्हें मेरी शक्ति पर शक है? मुझ पर आस्था रखने वाले के लिए सब कुछ संभव है!"

[24]इस पर ऊँची आवाज़ में लड़के के पिता ने कहा, "मुझमें आस्था है! पर यदि उसमें कुछ कमी है तो उसे दूर करने में मेरी मदद कीजिए।"

[25]प्रभु येशु ने देखा कि भीड़ बढ़ती जा रही है तो उन्होंने अशुद्ध आत्मा को डाँटकर कहा, "गूँगा-बहरा बना देने वाली आत्मा, मैं तुझे आज्ञा देता हूँ कि इसमें से निकल और फिर कभी इसे परेशान न करना।"

[26]अशुद्ध आत्मा लड़के को बहुत मरोड़कर चिल्लाती हुई उसमें से निकल गई। लड़का मरे समान हो गया, यहाँ तक कि अनेक लोग कहने लगे कि वह मर गया है। [27]परंतु प्रभु येशु ने उसको हाथ पकड़कर उठाया और वह खड़ा हो गया।

[28]जब प्रभु येशु घर आए तब शिष्यों ने एकांत में उनसे पूछा, “हम अशुद्ध आत्मा को क्यों नहीं निकाल सके?”

[29]उन्होंने कहा, “इस तरह की शक्तिशाली आत्माएँ परमात्मा से प्रार्थना किए बिना नहीं निकल सकतीं।”

गुरु येशु का अपनी मृत्यु के बारे में दूसरी बार बताना

[30]गुरु येशु अपने शिष्यों के साथ वहाँ से निकल गए और गलील प्रदेश से होकर जा रहे थे। गुरु येशु नहीं चाहते थे कि किसी को मालूम हो कि वह अपने शिष्यों के साथ कहाँ हैं [31]क्योंकि वह शिष्यों को अपने बारे में यह ज़रूरी जानकारी दे रहे थे, “तेजस्वी मानव-पुत्र विरोधियों के हाथ में सौंप दिया जाएगा। वे उसे मार डालेंगे, परंतु मरने के तीन दिन बाद वह ज़िन्दा हो जाएगा।” [32]यह बात शिष्यों के समझ में नहीं आई, पर वे उनसे इसका मतलब पूछने की हिम्मत नहीं कर पाए।

बड़ा पद पाने के लिए छोटा पद स्वीकार करना

[33]गुरु येशु और उनके शिष्य कफरनहूम शहर में आए। घर में गए और गुरु येशु ने शिष्यों से पूछा, “रास्ते में तुम क्या बहस कर रहे थे?” [34]वे चुप रहे, क्योंकि उनकी बहस इस बात पर थी कि उनमें से सबसे बड़ा पद किसका है। [35]प्रभु येशु बैठ गए और उन्होंने बारहों राजदूतों को अपने पास बुलाया और कहा, “यदि तुम सबसे बड़ा पद पाना चाहते हो तो तुम्हें सबसे छोटा पद स्वीकार करना होगा और सबकी सेवा करनी पड़ेगी।”

[36]तब उन्होंने एक बच्चे को लेकर उनके बीच खड़ा किया और उसे गोद में लेकर बोले, [37]“यदि तुम मेरे नाम से इस बच्चे को प्यार करते हो, तो वास्तव में तुम मुझ से प्यार करते हो और मेरे भेजने वाले परमात्मा से प्यार करते हो।”

प्रभु येशु के नाम में अद्‌भुत शक्ति है

[38]गुरु येशु के शिष्य योहन ने कहा, “गुरुजी, हमने एक मनुष्य को आपके नाम से अशुद्ध आत्मा निकालते हुए देखा, तो हमने उसे रोकने की कोशिश की, क्योंकि वह हमारे समूह का हिस्सा नहीं है।”

[39]प्रभु येशु बोले, “उसे मत रोको, क्योंकि ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जो मेरे नाम से चमत्कारी काम करे और दूसरे ही दिन मेरी बुराई करे। [40]जो हमारे विरोध में नहीं, वह हमारे पक्ष में है। [41]यदि कोई तुम्हें मेरे शिष्य कहलाने के नाते तुम्हें एक गिलास पानी भी पिलाए, तो मैं तुमसे सच कहता हूँ कि परमात्मा उसे अच्छा इनाम देंगे।”

पाप का जाल बिछाने वालों को भयंकर सज़ा

[42]प्रभु येशु ने आगे कहा, “उनको भयंकर सज़ा मिलेगी जो पाप का जाल बिछाकर मुझ पर आस्था रखने वाले मासूम बच्चों को फँसाते हैं। उन लोगों के लिए बेहतर होगा कि जो ऐसे पाप करने के बारे में सोचते भी हैं, उन्हें पकड़कर उनके गले में चक्की के पाट बाँधकर समुद्र में फेंक दिया जाए। [43]यदि तुम्हारा हाथ तुमसे पाप करवाए तो उसे काट दो। तुम्हारे सारे शरीर को दो हाथों के साथ नरक की कभी न बुझने वाली आग में झोंक दिया जाए, इससे तो अच्छा यह है कि तुम्हारे शरीर का एक ही अंग नाश हो और तुम्हें मोक्ष मिल जाए। [44-45]यदि तुम्हारे पैर तुमसे पाप करवाए तो उसे काट डालो। तुम्हारे सारे शरीर को दो पैर के साथ नरक में झोंक दिया जाए इससे तो अच्छा यह है कि लंगड़ा होकर तुम्हें मोक्ष मिल जाए। [46-47]और यदि तुम्हारी आँख तुमसे पाप करवाए तो उसे निकाल डालो। तुम्हारे सारे शरीर को दो आँखों के साथ नरक में झोंक दिया जाए इससे तो अच्छा यह है कि तुम एक आँख के साथ परमात्मा के साम्राज्य में जाओ। [48]तुम नरक कभी नहीं जाना चाहोगे ‘जहाँ मांस खाने वाले कीड़े कभी नहीं मरते और आग कभी नहीं बुझती।’

[49]“हर एक व्यक्ति आग द्वारा नमकीन किया जाएगा। [50]नमक अच्छा है, पर यदि नमक अपना स्वाद खो बैठे तो उसे किस चीज़ से नमकीन करोगे? तुम्हारे अच्छे कामों का स्वाद दूसरे लोग भी चखें, एक दुसरे के साथ मेल-मिलाप बनाए रखो।”

9:43 यशायाह 66:24 **9:48** यशायाह 66:24

10

परमात्मा के बनाए रिश्ते को कोई न तोड़े

[1]वहाँ से निकल कर प्रभु येशु यरदन नदी के पार यहूदिया प्रदेश की सीमा में आए। भीड़ उनके पास फिर इकट्ठा हो गई और जैसा वह हमेशा किया करते थे भीड़ को उपदेश देने लगे।

[2]कुछ फरीसी धार्मिक पंथ के लोग उनके पास आए और उनको परखने के लिए सवाल किया, “क्या किसी पुरुष के लिए अपनी पत्नी को तलाक देना सही है?”

[3]इसके जवाब में प्रभु येशु ने पूछा, “इसके बारे में परमात्मा के प्रवक्ता मोशे ने तुम्हें क्या आज्ञा दी है?”

[4]वे बोले, “मोशे ने एक नियम बनाया जो कहता है कि एक आदमी अपनी पत्नी को तलाक का कागज़ देकर घर से जाने के लिए कह सकता है।”

[5]प्रभु येशु ने उनसे कहा, “तुम्हारे मन की कठोरता के कारण उन्होंने यह नियम बनाया, [6]परंतु सृष्टि के आरंभ से परमात्मा ने उन्हें नर और नारी बनाया है। [7-8]और इसलिए, पति और उसकी पत्नी दो नहीं, परंतु एक होंगे, और वे एक नए अनोखे रिश्ते की शुरुआत करेंगे। यह रिश्ता उसके माता-पिता के रिश्ते से अलग होगा। और अब वे दो नहीं बल्कि एक तन है।* [9]इसलिए जिसे परमात्मा ने जोड़ा है उसे कोई अलग न करे।”

[10]जब वे वापस घर पर आए, शिष्यों ने इस बारे में प्रभु येशु से फिर पूछा। [11]उन्होंने कहा, “जो कोई अपनी पत्नी को त्यागकर दूसरी औरत से शादी करता है, वह पहली पत्नी के विरुद्ध यौन पाप करता है [12]और यदि पत्नी अपने पति को त्यागकर दूसरे पुरुष से शादी करती है तो वह भी यौन पाप करती है।”

परमात्मा के साम्राज्य में बच्चे महत्वपूर्ण

[13]लोग बच्चों को प्रभु येशु के पास लाए कि वह उनके सिर पर हाथ रख कर आशीर्वाद दें, पर जिनके साथ बच्चे आए थे शिष्यों ने उन लोगों को डाँटा।

10:4 उपदेश 24:1 **10:7-8** उत्पत्ति 1:27; 2:24 * **10:7-8** *एक तन है* - या, “एक नया परिवार है”

[14]प्रभु येशु ने यह देखा तो वह नाराज़ हुए और शिष्यों से कहा, “बच्चों को मेरे पास आने दो, उन्हें मना न करो, क्योंकि वे भी परमात्मा के साम्राज्य का हिस्सा हैं। [15]मैं तुमसे सच कहता हूँ, यदि कोई परमात्मा के साम्राज्य में जाना चाहता है तो उसका स्वभाव बच्चों के समान कोमल होना होगा। नहीं तो उसका जाना कभी संभव नहीं है।” [16]तब प्रभु येशु ने बच्चों को गोद में लिया, उनके सिर पर हाथ रखे और उन्हें आशीर्वाद दिया।

पैसे से नज़दीकी का अर्थ मोक्ष से दूरी

[17]प्रभु येशु वहाँ से निकलकर रास्ते पर जा रहे थे कि एक मनुष्य दौड़ता हुआ उनके पास आया। उसने प्रभु येशु के आगे घुटने टेककर उनसे पूछा, “हे उत्तम गुरु, मोक्ष प्राप्त करने के लिए मैं क्या करूँ?”

[18]प्रभु येशु ने कहा, “तुम मुझे उत्तम क्यों कहते हो? सिर्फ परमात्मा ही उत्तम हैं। [19]तुम आज्ञाएँ जानते हो, ‘हत्या न करो, शादी के बाहर शारीरिक सम्बन्ध न रखना, चोरी न करो, दूसरों के बारे में झूठ मत बोलो, ठगी मत करो, और अपने माता-पिता का आदर करो।’”

[20]वह बोला, “गुरुजी, इन सब आज्ञाओं का तो मैं अपने बचपन से ही पालन करता आ रहा हूँ।”

[21]प्रभु येशु ने उसको देखा और उनका मन दया से भर गया। वह बोले, “तुममें एक बात की कमी है। जाओ, जो कुछ तुम्हारा है उसे बेच दो और जो पैसा मिले उसे गरीबों में बाँट दो, और परमस्वर्ग में तुम्हें धन मिलेगा। उसके बाद आना और मेरे शिष्य बनना।”

[22]यह सुनकर वह उदास हो गया और दुखी होकर चला गया, क्योंकि वह बहुत अमीर था।

[23]प्रभु येशु ने अपने आस-पास इकट्ठा शिष्यों से कहा, “अमीरों का परमात्मा के साम्राज्य में जाना कितना कठिन है।” [24]इन शब्दों को सुनकर शिष्य हैरान हो गए, परंतु प्रभु येशु ने फिर उनसे कहा, “प्रिय शिष्यो,+ परमात्मा के साम्राज्य में जाना कितना कठिन है! [25]परमात्मा के साम्राज्य में धनवान के जाने के मुकाबले ऊँट का सुई के छेद से निकल जाना ज़्यादा आसान है।”

10:19 निर्गमन 20:12-16; उपदेश 5:16-20; 24:14

[26]शिष्य और भी हैरान हुए और आपस में कहने लगे, “तो फिर मुक्ति किसको मिल सकती है?”

[27]प्रभु येशु ने उनकी ओर देखकर कहा, “इंसानों के लिए तो यह असंभव है पर परमात्मा के लिए नहीं, क्योंकि परमात्मा के लिए सबकुछ संभव है।”

[28]शिष्य पतरस बोल उठा, “हमने तो आपका शिष्य बनने के लिए सब कुछ छोड़ दिया है।”

[29]प्रभु येशु ने कहा, “मैं तुमसे सच कहता हूँ, ऐसा कोई नहीं है जिसने मेरे और शुभ संदेश के लिए घर, भाई, बहन, माता, पिता, संतान या ज़मीन को छोड़ा हो [30]और उसे इस जीवन में इन सब का सौ गुना वापस न मिले। और साथ ही साथ लोगों का अत्याचार भी तुम पर बढ़ेगा, परंतु आने वाले संसार में तुम को मोक्ष ज़रूर मिलेगा। [31]जिन्हें यहाँ कुछ नहीं समझा जाता है, वहाँ उन्हें बहुत सम्मान मिलेगा और जिन्हें यहाँ बहुत कुछ समझा जाता है, उन्हें वहाँ कोई सम्मान नहीं मिलेगा।”

मृत्यु के बाद ज़िन्दा होने की तीसरी भविष्यवाणी

[32]जब गुरु येशु उन्हें यरूशलम शहर की ओर ले जा रहे थे तो उनके राजदूत बहुत हैरान थे और उनके अन्य शिष्य डरे हुए थे। गुरु येशु ने बारह राजदूतों को अलग ले जाकर उन्हें बताया कि आने वाले दिनों में उनके साथ क्या होगा। [33]उन्होंने कहा, “हम यरूशलम जा रहे हैं, और वहाँ तेजस्वी मानव-पुत्र प्रधान पुरोहितों और धर्मगुरुओं के हाथों में सौंप दिया जाएगा। वे उसे मृत्युदंड की सज़ा के लिए रोम के शासकों* के हाथ में सौंप देंगे। [34]वे उसका मज़ाक उड़ाएँगे, उस पर थूकेंगे, कोड़े लगाएँगे और मार डालेंगे, पर वह तीन दिन बाद ज़िन्दा हो जाएगा।”

प्रभु येशु के सिंहासन के दाईं और बाईं ओर कौन बैठेगा

[35]ज़बदियाह के दोनों पुत्र याकोब और योहन, प्रभु येशु के पास आए और बोले, “गुरुजी, हम आप से कुछ विनती करना चाहते हैं।”

---

* **10:33** *रोम के शासकों* - या, “लोग, जो यहूदी नहीं हैं।”

[36]प्रभु येशु ने पूछा, “तुम मुझसे क्या चाहते हो?”

[37]वे बोले, “जब आप अपने तेजस्वी सिंहासन पर शासन करने बैठेंगे तब हममें से एक को अपनी दाईं ओर और दूसरे को बाईं ओर बैठने का अधिकार दें।”

[38]प्रभु येशु ने उनसे कहा, “तुम्हें पता नहीं कि तुम अपने लिए क्या माँग रहे हो। क्या तुममें उन दुखों को सहने की शक्ति है जिन्हें मैं सहने वाला हूँ, या उस दुख के सागर में जाने की शक्ति है जिसमें मैं जाने वाला हूँ?”

[39]शिष्य बोले, “हाँ, शक्ति है।”

इस पर प्रभु येशु ने उनसे कहा, “जो दुख मुझे सहना है, तुम भी उसे सहोगे और जिस दुख के सागर में मैं जाने वाला हूँ, तुम भी उसमें जाओगे। [40]पर अपने सिंहासन की दाईं ओर और बाईं ओर बैठाना, मेरे अधिकार में नहीं है। परमात्मा ने वे जगह अपने चुने हुए लोगों के लिए रखे हुए हैं।”

[41]जब अन्य दस राजदूतों ने यह सुना, तब वे याकोब और योहन पर नाराज़ हुए। [42]प्रभु येशु ने उनको बुलाकर कहा, “तुम जानते हो कि जो व्यक्ति देश में बड़े अधिकारी नियुक्त किए जाते हैं, वे लोगों पर कठोरता से शासन करते हैं, और उन पर अधिकार जताते हैं। [43]परंतु तुम ऐसा नहीं करना। इसके बजाय जो तुममें महान होना चाहे, वह तुम सब की सेवा करे। [44]और तुममें से जिसे सबसे ऊँचा पद चाहिए, वह सबका सेवक बनें, [45]क्योंकि तेजस्वी मानव-पुत्र सेवा कराने नहीं, परंतु सेवा करने और बहुत से लोगों को मुक्ति देने के बदले में, अपने प्राणों की बलि देनें आए है।”

अंधे की आँखों का ठीक हो जाना

[46]यरीखो शहर में समय बिताने के बाद, गुरु येशु अपने शिष्यों और एक बड़ी भीड़ के साथ जा रहे थे तब उन्हें रास्ते के किनारे बैठा हुआ एक अंधा व्यक्ति, तिमेयस का पुत्र बरतिमेयस, भीख माँगता हुआ मिला। [47]जब उसने सुना कि नासरत-निवासी प्रभु येशु जा रहे हैं तब वह पुकारकर कहने लगा, “हे राजा दाविद के वंशज, हे प्रभु येशु, मुझ पर दया कीजिए।”

[48]लोगों ने डाँटकर भिखारी को चुप रहने के लिए कहा, पर वह और ज़ोर से चिल्लाने लगा, “हे राजा दाविद के वंशज, मुझ पर दया कीजिए!”

[49]प्रभु येशु रुक गए और कहा, “उसे बुलाओ।”

शिष्यों ने अंधे को बुलाया और कहा, “हिम्मत बांधो, उठो। गुरुजी तुम्हें बुला रहे हैं।”

[50]वह अपना कम्बल फेंककर उछल पड़ा और प्रभु येशु के पास आया।

[51]प्रभु येशु ने उससे पूछा, “बताओ कि मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ?”

अंधे ने कहा, “गुरुजी, मैं चाहता हूँ मुझे मेरी आँखों की रोशनी वापस मिल जाए।”

[52]प्रभु येशु ने कहा, “जाओ, तुम्हारी आस्था ने तुम्हें ठीक किया है।” वह उसी समय देखने लगा और प्रभु येशु का शिष्य बनकर उनके साथ मार्ग में हो लिया।

11

मुक्तिदाता की अद्‌भुत सवारी

[1]प्रभु येशु और उनके शिष्य जैतून नामक पहाड़ी के पास बैथफगे और बैथनिया गाँव पहुँचे। जब वे यरूशलम शहर के नज़दीक आए तब गुरु येशु ने अपने दो शिष्यों से कहा, [2]“सामने के गाँव में जाओ। वहाँ जाने पर तुम्हें गधी का बच्चा बंधा हुआ मिलेगा जिस पर अब तक किसी ने सवारी नहीं की है। उसे खोलकर ले आओ। [3]यदि कोई तुमसे पूछे, ‘यह क्या कर रहे हो?’ तो कह देना, ‘प्रभु को इसकी ज़रूरत है और वह इसे जल्दी ही यहाँ वापस भिजवा देंगे।’”

[4]दोनों शिष्य गए और उन्होंने गधी के बच्चे को बाहर सड़क के किनारे एक दरवाज़े पर बंधा हुआ पाया। वे उसे खोलने लगे। [5]वहाँ खड़े हुए लोगों ने पूछा, “यह क्या कर रहे हो? इसे क्यों खोल रहे हो?”

[6]शिष्यों ने वही कह दिया जो प्रभु येशु ने बताया था। इसलिए लोगों ने उन्हें ले जाने दिया। [7]वे गधी के बच्चे को प्रभु येशु के पास लाए और उस पर अपनी शालें बिछाईं और प्रभु येशु उस पर बैठ गए।

[8]अनेक लोगों ने उनके सम्मान में रास्ते पर शालें बिछाई और अन्य लोगों ने उनके सम्मान में खजूर के पेड़ की शाखाएँ काटकर उनके रास्ते में बिछा दीं। [9]उनके आगे और पीछे चलने वाले लोग जयकारे लगा रहे थे,

“जय हो!
प्रभु परमात्मा के नाम से आने वाले का गुणगान हो!
[10]हमारे पूर्वज राजा दाविद के आने वाले साम्राज्य की जय हो!
परमस्वर्ग में जयकारे!”

[11]तब प्रभु येशु यरूशलम में आए और वह परमात्मा के मंदिर के आँगन में आए। फिर सब हालात देखकर वह अपने बारह शिष्यों के साथ बैथनिया गाँव चले गए, क्योंकि उस समय शाम हो गई थी।

अंजीर के पेड़ को शाप

[12]दूसरे दिन जब गुरु येशु और उनके शिष्य बैथनिया गाँव से निकल रहे थे तब प्रभु येशु को भूख लगी। [13]वह दूर से एक हरे-भरे अंजीर के पेड़ को देखकर उसके पास गए कि उस पर कुछ फल मिल जाएँ। परंतु वहाँ पहुँचने पर उन्हें पत्तों के अलावा कुछ न मिला, क्योंकि यह अंजीर फलने का मौसम नहीं था। [14]प्रभु येशु पेड़ से बोले, “अब से तेरा फल कोई न खाए।” उनके शिष्य यह सुन रहे थे।

धार्मिक गुरुओं का प्रभु येशु से डरना

[15]तब गुरु येशु और उनके शिष्य यरूशलम शहर पहुँचे। प्रभु येशु परमात्मा के मंदिर के आँगन में आए और वह बलि के लिए पशु बेचने और खरीदने वालों को वहाँ से खदेड़ने लगे। उन्होंने मुद्रा-व्यापारियों की और कबूतर बेचने वालों की गद्दियाँ उलट दीं, [16]और किसी को भी परमात्मा के मंदिर के आँगन में बेचने का सामान* लेकर आने जाने की अनुमति न दी। [17]उन्होंने लोगों को डांटते हुए यह कहा, “क्या परमात्मा-ग्रंथ में यह नहीं लिखा है, ‘मेरा मंदिर दुनिया के हर समाज के

11:9 भजन शास्त्र 118:25,26; जकरयाह 9:9 * **11:16** *बेचने का सामान* - या सिर्फ, “सामान”

लोगों के लिए प्रार्थना का मंदिर कहलाएगा’? किंतु तुमने तो उसे ‘चोरों का अड्डा’ बना दिया है।”

[18]जब प्रधान पुरोहितों और धर्मगुरुओं ने यह सुना तो वे उनको मार डालने के उपाय ढूँढ़ने लगे। वे प्रभु येशु से डरते थे, क्योंकि उनकी अद्‌भुत शिक्षाओं के कारण लोग उन्हें बहुत मानते थे।

[19]शाम होने पर गुरु येशु और उनके शिष्य शहर के बाहर चले गए।

प्रार्थना और आस्था में शक और नफ़रत का स्थान नहीं

[20]सुबह के समय जब शिष्य अंजीर के पेड़ के पास से गुज़र रहे थे तो उन्होंने देखा कि वह पेड़ जड़ से सूख गया है। [21]शिष्य पतरस को याद आया कि प्रभु येशु ने पेड़ से क्या कहा था, और वह बोला “गुरुजी, देखिए, यह अंजीर का पेड़ जिसे आपने शाप दिया था, सूख गया है।”

[22]प्रभु येशु बोले, “परमात्मा पर आस्था रखो। [23]मैं तुमसे सच कहता हूँ, अगर तुम परमात्मा में आस्था रखो और मन में शक न करो तो तुम इस पहाड़ को उठकर समुद्र में कूदने के लिए कह सकते हो, और यह हो जाएगा। [24]इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ, यदि तुम प्रार्थना में कुछ माँगते हो, तो आस्था रखो कि परमात्मा ने तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार कर ली है और वह तुम्हें मिल जाएगा।

[25-26]“जब तुम प्रार्थना करो,* उस समय यदि तुम्हारे मन में किसी के लिए नफरत हो क्योंकि उसने तुम्हारे विरुद्ध पाप किया है, तो उसे माफ कर दो, ताकि तुम्हारे पिता परमात्मा भी तुम्हारे पाप माफ कर दें।”

गुरु येशु के अधिकार को चुनौती

[27]गुरु येशु और उनके शिष्य फिर यरूशलम में आए। जब गुरु येशु परमात्मा के मंदिर के आँगन में टहल रहे थे तब प्रधान पुरोहित, धर्मगुरु और समाज के बड़े उनके पास आए [28]और उनसे पूछा, “किस अधिकार से तुमने मंदिर में से व्यापारियों को खदेड़ा?* किसने तुमको यह करने का अधिकार दिया?”

11:17 यशायाह 56:7 **11:17** यरमियाह 7:11 * **11:25-26** *प्रार्थना करो* - यहूदी लोग खड़े होकर और अपने चेहरे को आकाश की ओर उठाकर परमात्मा से प्रार्थना किया करते थे। * **11:28** *मंदिर में से व्यापारियों को खदेड़ा* - या, “यह सब कर रहे हो?”

[29]प्रभु येशु ने कहा, “मैं तुमसे एक सवाल पूछता हूँ। जवाब दो, फिर मैं भी तुम्हें बताऊँगा कि मैं किस अधिकार से ये काम करता हूँ। [30]बोलो, योहन को समर्पण-स्नान देने का अधिकार किसने दिया? परमात्मा ने* या इंसानों ने?”

[31]वे आपस में विचार करने लगे, “यदि हम कहें ‘परमात्मा ने’ तो येशु कहेंगे, ‘फिर तुमने योहन पर विश्वास क्यों नहीं किया?’ [32]और हम यह भी नहीं कह सकते कि ‘लोगों ने योहन को समर्पण-स्नान देने का अधिकार दिया था’ क्योंकि इन लोगों को लगता है कि परमात्मा ने अपने प्रवक्ता योहन को भेजा था।” [33]इसलिए उन्होंने लोगों के डर के कारण प्रभु येशु को जवाब दिया, “हम नहीं जानते यह अधिकार उसे किसने दिया।”

इस पर प्रभु येशु ने कहा, “मैं भी तुम्हें नहीं बताऊँगा कि किसने मुझे ये काम करने का अधिकार दिया है।”

12

धार्मिक गुरुओं को आईना दिखाना

[1]तब प्रभु येशु ने प्रधान पुरोहितों, धर्मगुरुओं, और समाज के बड़ों को यह कहानी सुनाई।

“एक मनुष्य ने अंगूर का बाग लगाया। उसके चारों ओर पत्थर की दीवार बनाई, उसमें अंगूरों को कुचलकर रस निकालने के लिए कुंड बनाया, और उसकी पहरेदारी के लिए एक ऊंचे स्थान पर जगह बनाई। ये सब इंतज़ाम करने के बाद वह बाग किसानों को किराए पर देकर विदेश चला गया। [2]फल का मौसम आने पर उसने एक सेवक को किसानों के पास भेजा कि अंगूर के बाग के फल से अपना हिस्सा ले। [3]पर किसानों ने उसे पकड़कर बुरी तरह से पीटा और खाली हाथ लौटा दिया।

[4]“तब बाग के मालिक ने अपने दूसरे सेवक को उनके पास भेजा। उन्होंने उसका सिर फोड़ दिया और उसे अपमानित किया। [5]तब उसने

---

* **11:30** *परमात्मा ने* - (या, “परमस्वर्ग की ओर से”) अक्सर यहूदी लोग “परमस्वर्ग से” शब्द का प्रयोग करते थे जिसका अर्थ है, “परमात्मा से।”

और भी सेवक भेजे। इसी प्रकार उन किसानों ने सबके साथ ऐसा ही किया, कुछ को पीटा और कुछ को मार डाला। [6]मालिक का एक बेटा था जिसे वह बहुत प्यार करता था। आखिर में, उसने अपने बेटे को यह सोचकर भेज दिया कि किसान उसका आदर ज़रूर करेंगे।

[7]“पर उन किसानों ने आपस में कहा, ‘एक दिन यह व्यक्ति इस बाग का मालिक बनेगा। आओ, इसे मार डालें ताकि इसकी पूरी संपत्ति पर कब्ज़ा कर लें।’ [8]तो उन्होंने उसको पकड़कर मार डाला और बाग के बाहर फेंक दिया।

[9]“अंगूर-बाग का मालिक अब क्या करेगा? वह आएगा और किसानों को मार डालेगा और अंगूर-बाग दूसरों को किराए पर दे देगा।* [10]क्या तुमने परमात्मा-ग्रंथ में यह लिखा नहीं पढ़ा?

‘जिस पत्थर को भवन बनाने वालों ने बेकार समझा
वह नींव का सबसे महत्वपूर्ण पत्थर बन गया।
[11]यह प्रभु परमात्मा ने किया,
और हमारी दृष्टि में अद्भुत है!’”

[12]प्रधान पुरोहितों, धर्मगुरुओं, और समाज के बड़ों को अहसास हो गया कि प्रभु येशु ने यह कहानी उनके बारे में बताई है, इसलिए वे उन्हें बंदी बनाना चाहते थे। लेकिन वे भीड़ से डरते थे, तो वे प्रभु येशु को छोड़ कर चले गए।

[13]तब इन पुरोहितों, धर्मगुरुओं, और समाज के बड़ों ने कुछ फरीसियों और राजा हेरोदेस के समर्थकों* को प्रभु येशु के पास भेजा कि वे प्रभु येशु को उनके ही शब्दों में फँसाएँ। [14]उन्होंने आकर कहा, “गुरुजी, हम जानते हैं कि आप सच्चे हैं और आपको किसी का डर नहीं है। आप मुँह देखी बात नहीं करते पर सच्चाई से परमात्मा के मार्ग का उपदेश देते हैं। हमें यह बताइए, रोम सम्राट को टैक्स देना सही है या नहीं?”

[15]प्रभु येशु उनकी चालाकी भाँप कर उनसे बोले, “ढोंगीयो, तुम मेरी परीक्षा क्यों ले रहे हो? मुझे एक सिक्का दिखाओ।”

---

* **12:9** *दूसरों को किराए पर दे देगा* - “दूसरों” शब्द यहाँ पर हर समाज के लोगों के लिए प्रयोग किया है जो परमात्मा और प्रभु येशु का आदर किया करते थे। **12:11** भजन शास्त्र 118:22-23

* **12:13** *फरीसियों और राजा हेरोदेस के समर्थकों* - हालाँकि इन दोनों पंथों में कुछ भी समानता नहीं थी, परंतु ये दोनों प्रभु येशु के विरुद्ध बुरे उद्देश्य के लिए एक हो गए थे।

[16]तो उन्होंने एक सिक्का उन्हें दे दिया। प्रभु येशु ने सिक्का दिखा कर एक प्रश्न किया, “यह किसका चित्र है और इस पर किसका नाम लिखा है?”

उन्होंने उत्तर दिया, “रोम के सम्राट का चित्र है और उन्हीं का नाम लिखा है।”

[17]प्रभु येशु ने कहा, “यह सम्राट का है इसे सम्राट को दो। और जो परमात्मा का है उसे परमात्मा को दो।”

इस पर वे हैरान रह गए।

मृत्यु के बाद रिश्ते कैसे होंगे?

[18]कुछ सदूकी धार्मिक पंथ के लोग प्रभु येशु के पास आए। सदुकियों का मानना था कि अच्छे और बुरे कर्मों के न्याय के दिन परमात्मा मृत लोगों को जीवित नहीं करेंगे। तो उन्होंने प्रभु येशु से प्रश्न किया, [19]“गुरुजी, परमात्मा के प्रवक्ता मोशे ने हमारे लिए लिखा है कि यदि शादी-शुदा बड़े भाई की मृत्यु बिना संतान हो जाती है, तो छोटे भाई को विधवा भाभी से शादी करनी चाहिए। तब उनका पहला बेटा मृत जेठ का बेटा माना जाएगा। [20]अब हमारी उलझन को दूर करें। एक घर में सात भाई एक साथ रहा करते थे। बड़े भाई ने शादी की और बिना कोई बच्चा हुए मर गया। [21]उस छोटे भाई ने विधवा भाभी से शादी की और वह भी बिना संतान मर गया ऐसा ही तीसरे भाई के साथ भी हुआ। [22]और सभी सात भाइयों ने इस औरत से शादी की और बिना किसी बच्चे के उन सब भाइयों की मृत्यु हो गई। अंत में वह औरत भी मर गई। [23]अगर परमत्मा सब मरे हुए लोगों का न्याय करने के लिए उन्हें ज़िन्दा करेंगे, तब वह औरत किस भाई की पत्नी होगी? क्योंकि वह तो सातों भाइयों की पत्नी रही थी।”

[24]प्रभु येशु ने उनसे कहा, “मरे हुए लोगों के ज़िन्दा होने के बारे में तुम्हारी सोच गलत है। तुम परमात्मा-ग्रंथ और परमात्मा की शक्ति को नहीं जानते। [25]जब परमात्मा मरे हुए इंसानों को ज़िन्दा करेंगे तो वे लोग शादी नहीं करेंगे, परंतु वे स्वर्गदूतों के समान होंगे।

12:19 उपदेश 25:5

[26]"रहा मौत के बाद लोगों के ज़िन्दा होने के बारे में तुम्हारा सवाल। क्या तुमने परमात्मा के प्रवक्ता मोशे की पुस्तक में जलती हुई झाड़ी के बारे में यह नहीं पढ़ा कि कुलपिता अब्राहम, इसहाक और याकोब की मृत्यु के बहुत समय बाद? परमात्मा ने मोशे से कहा, 'मैं वह परमात्मा हूँ जिसकी भक्ति अब्राहम, इसहाक और याकोब की जीवित आत्माएँ भी करती हैं।' [27]सदूकियो, तुम्हारे विचार गलत हैं। परमात्मा मरे हुए लोगों के नहीं, परंतु जीवित आत्माओं के परमात्मा हैं।"

प्रेम चढ़ावों से कहीं अधिक ज़रूरी है

[28]एक धर्मगुरु यह वाद-विवाद सुन रहा था। उसने देखा कि प्रभु येशु ने सदूकियों को ठीक जवाब दिया है। तब उसने प्रभु येशु से प्रश्न पूछा, "कौन सी नियम मानना सबसे ज़रूरी है?"

[29]प्रभु येशु ने उत्तर दिया, "सबसे ज़रूरी नियम यह है, 'हे इज़राएल के लोगों सुनों, प्रभु परमात्मा एक ही है। [30]तुम प्रभु परमात्मा से पूरे मन, पूरे जीवन, पूरी बुद्धि और पूरी शक्ति से प्रेम करो।' [31]दूसरी प्रमुख आज्ञा यह है, 'तुम अपने से जितना प्रेम करते हो उतना ही दूसरों से भी करो।' इनसे ज़रूरी और कोई आज्ञा नहीं है।"

[32]उस धर्मगुरु ने कहा, "गुरुजी, आपने सच कहा कि परमात्मा एक हैं, उनके अलावा और कोई नहीं। [33]और यह भी सच है कि परमात्मा को अपने पूरे मन, पूरी बुद्धि और पूरी शक्ति से प्रेम करना और तुम अपने से जितना प्रेम करते हो उतना ही दूसरों को भी करना। इन आज्ञाओं को मानना चढ़ावों और बलि से अधिक ज़रूरी है।"

[34]प्रभु येशु ने देखा कि उसने समझदारी से जवाब दिया है तो उससे बोले, "तुम परमात्मा के साम्राज्य से दूर नहीं हो।" इसके बाद किसी को उनसे और कोई प्रश्न पूछने का साहस नहीं हुआ।

मुक्तिदाता के बारे में सवाल

[35]जब प्रभु येशु परमात्मा के मंदिर के आँगन में उपदेश दे रहे थे उन्होंने कहा, "धर्मगुरु किस आधार पर कहते हैं कि मुक्तिदाता राजा दाविद

12:31 लेवी 19:18

के वंशज हैं [36]जबकि स्वयं राजा दाविद ने पवित्र आत्मा की प्रेरणा से यह कहा है,

‘प्रभु परमात्मा ने मेरे प्रभु से कहा,
“जब तक मैं तुम्हारे शत्रुओं को तुम्हारे पाँव तले न ले आऊँ,
तुम मेरे सिंहासन की दाईं ओर बैठकर शासन करो।”’

[37]“अगर राजा दाविद स्वयं उसे ‘मेरे प्रभु’ कहता है, तो मुक्तिदाता राजा दाविद के सिर्फ वंशज कैसे हुए?”

बड़ी भीड़ प्रभु येशु की बातें सुनने में आनंद ले रही थी।

दिखावटी धार्मिकता के गंभीर परिणाम

[38]अपने उपदेश में प्रभु येशु ने कहा, “धर्मगुरुओं से सावधान रहो, क्योंकि उन्हें लंबे-लंबे चोगे पहनकर घूमना, सार्वजनिक जगहों में लोगों का झुक कर प्रणाम लेना अच्छा लगता है। [39]उन्हें सत्संग भवनों में प्रमुख आसन और दावतों में सम्मानित स्थान पर बैठना बहुत पसंद है। [40]घर के मुखिया की मृत्यु हो जाने पर, वे विधवाओं से सारी संपत्ति ले लेते हैं। और वे सिर्फ दिखावे के लिए लंबी-लंबी प्रार्थनाएँ करते हैं। परमात्मा उन्हें भयंकर दंड देंगे।”

गरीब विधवा का अद्‌भुत दान

[41]प्रभु येशु मंदिर की दान पेटियों के सामने बैठे हुए देख रहे थे कि किस प्रकार लोग पेटियों में दान डाल रहे हैं। अनेक अमीर लोग पेटियों में मोटी रकम डाल रहे थे। [42]इतने में एक गरीब विधवा आई। उसने दो छोटे सिक्के पेटी में डाले, जिनका मूल्य एक रुपय से भी कम होता है।

[43]इस पर गुरु येशु ने अपने शिष्यों को बुलाकर कहा, “मैं तुमसे सच कहता हूँ, इस गरीब विधवा ने सब के मुकाबले पेटी में ज़्यादा दान डाला है। [44]क्योंकि अन्य सबने अपने बहुत पैसे में से थोड़ा सा दान दे दिया है। इस गरीब विधवा के पास तो थोड़ा ही था, परंतु उसने वह भी दान पेटी में डाल दिया और यह भी नहीं सोचा कि कल खाने का पैसा कहाँ से लाएगी।”

12:36 भजन शास्त्र 110:1

13

प्रभु येशु की भविष्यवाणी

[1]जब प्रभु येशु परमात्मा के मंदिर से निकल ही रहे थे तब उनके शिष्यों में से एक ने उनसे कहा, “गुरुजी, देखिए, कैसे सुंदर पत्थरों से ये विशाल भवन* बने हैं!”

[2]प्रभु येशु ने उनसे कहा, “ये विशाल भवन जो तुम देख रहे हो, वह समय आएगा जब इन भवनों का एक भी पत्थर अपने स्थान पर नहीं बचेगा। हर एक पत्थर को नीचे ढाह दिया जाएगा।”

[3]जब प्रभु येशु मंदिर के सामने जैतून पहाड़ी पर बैठे हुए थे तब पतरस, याकोब, योहन और अंदरियास ने एकांत में उनसे पूछा, [4]“हमें बताइए कि ये घटनाएँ कब होंगी? और इन घटनाओं के लक्षण क्या होंगे?”

[5]प्रभु येशु ने कहा, “सावधान रहना कि कोई तुम्हें धोखे में न डाले। [6]कई लोग आएँगे और दावा करेंगे कि वे ही मुक्तिदाता हैं और बहुत से लोगों को धोखे में डालेंगे।

[7]“जब तुम युद्ध की आवाज़ें और युद्ध के समाचार सुनोगे, तो उस समय घबराना मत। क्योंकि यह होना ज़रूरी है, किन्तु इसे ही इस संसार का अंत मत समझ लेना। [8]देश-देश के विरुद्ध और साम्राज्य-साम्राज्य के विरुद्ध युद्ध करेंगे। अलग-अलग जगहों में भूकंप आएँगे और अकाल पड़ेंगे। ये सभी परेशानियाँ तो प्रसव पीड़ा के समान शुरुआत मात्र होगी।

[9]“सावधान रहो! लोग तुम्हें गिरफ्तार करवाकर अदालतों में पेश करेंगे, और सत्संग भवनों में तुम्हें कोड़े लगवाएँगे। मेरे कारण तुम शासकों और राजाओं के सामने न्याय के लिए खड़े किए जाओगे और तुम उन्हें बताओगे कि मैं ही मुक्तिदाता हूँ। [10]परंतु पहले दुनिया के हर समाज के लोगों को मेरे बारे में शुभ संदेश का सुनाया जाना ज़रूरी है।

[11]“जब वे तुम्हें गिरफ्तार करके अदालत में ले जाएँ तब पहले से ही चिंता न करना कि तुम जज के सामने क्या कहोगे। उस समय जो कुछ

---

* **13:1** *ये विशाल भवन* - इतिहासकार जोसीफस और तैसितस के अनुसार यरूशलम के सुंदर और भव्य मंदिर की तारीफ पूरे रोम साम्राज्य में होती थी।

परमात्मा तुम्हें बोलने को कहें, वही बोलना, क्योंकि बोलने वाले तुम नहीं, परंतु परमात्मा की पवित्र आत्मा होगी।

[12]“भाई भाई को और पिता पुत्र को मृत्यु के लिए सौंप देगा। संतान अपने माता-पिता के विरुद्ध उठ खड़ी होगी और उन्हें मरवा डालेगी। [13]मेरे नाम के कारण सब तुमसे नफ़रत करेंगे। परंतु जो व्यक्ति अपनी अंतिम सांस तक आस्था से नहीं डगमगाएगा, वह परमात्मा से मुक्ति का वरदान पाएगा।”

महासंकट की चेतावनी

[14]प्रभु येशु ने कहा, “किसी दिन तुम देखोगे कि वह घिनौनी चीज़ उस स्थान पर है जहाँ उसे नहीं होना चाहिए।”

(लेखक मरकुस यहाँ लिखता है कि हर कोई जो इसे पढ़ता है, उसे समझने की कोशिश करनी चाहिए!)

प्रभु येशु ने आगे कहा, “तो जो यहूदिया प्रदेश में रहते हों, पहाड़ों पर भाग जाएँ। [15]जो छत पर हो, वह घर से कोई चीज़ लेने को नीचे न उतरे। [16]और जो खेत में हो, वह घर से कोई कपड़ा लेने के लिए वापस न जाएँ। [17]उन स्त्रियों के लिए बहुत बुरा होगा जो उन दिनों गर्भवती होंगी या दूध पिलाती होंगी। [18]प्रार्थना करो कि यह सब ठंडे मौसम में न हो। [19]क्योंकि जब से परमात्मा ने दुनिया बनाई है तब से दुख का यह सबसे बुरा समय होगा, और इतना भयानक दुख आने वाले समय में फिर कभी नहीं होगा। [20]यदि प्रभु परमात्मा उस भयंकर समय को कम नहीं करते तो कोई भी ज़िन्दा नहीं बचता। परंतु उन्होंने अपने चुने हुए भक्तों के कारण लोगों के ऊपर आने वाले भयंकर समय को घटा दिया है।

[21]“उस समय यदि कोई कहे, ‘देखो, मुक्तिदाता यहाँ है,’ या ‘देखो, वह वहाँ है’ तो इस बात पर विश्वास न करना, [22]क्योंकि झूठे मसीहा और झूठे लोग जो अपने आप को परमात्मा के प्रवक्ता कहेंगे अचानक पैदा हो जाएँगे। वे अद्‌भुत निशनियाँ और चमत्कार दिखाएँगे जिससे ये परमात्मा के चुने हुए लोगों को भी धोखे में डालने की कोशिश करेंगे। [23]मैंने पहले ही तुम्हें सबकुछ बता दिया है। इसलिए सावधान रहना।”

तेजस्वी मानव-पुत्र का बादलों पर सवार होकर आना

[24]प्रभु येशु ने आगे कहा, “उन दिनों की परेशानियों के बाद ही

सूरज में अँधेरा छा जाएगा और चाँद भी रोशनी नहीं देगा।
[25] आकाश से तारे गिरेंगे और स्वर्ग की शक्तियाँ हिल जाएँगी।

[26]“तब सभी तेजस्वी मानव-पुत्र को बड़ी शक्ति और तेज के साथ बादलों पर आता हुआ देखेंगे। [27]और तेजस्वी मानव-पुत्र अपने स्वर्गदूतों को भेजेंगे कि वे उनके चुने हुए भक्तों को सारी दुनिया से इकट्ठा करें, धरती और आकाश के कोने-कोने से।

[28]“अंजीर के पेड़ से यह सीखो। ज्यों ही उसकी शाखाएँ कोमल होती हैं और उसमें पत्ते निकलने लगते हैं, तुम जान लेते हो कि गर्मी का मौसम नज़दीक है। [29]इसी प्रकार जब तुम ये भयंकर घटनाएँ होते देखो तो समझ लेना कि तेजस्वी मानव-पुत्र नज़दीक है, दरवाज़े पर ही है। [30]मेरी बात ध्यान से सुनो। इन घटनाओं के हुए बिना इस पीढ़ी का अंत नहीं होगा। [31]आकाश और पृथ्वी हमेशा के लिए नहीं रहेंगे, लेकिन मेरे शब्द हमेशा रहेंगे।

[32]“परंतु उस दिन और घड़ी के बारे में, जब यह सब होगा, पिता परमात्मा के अलावा और कोई नहीं जानता, न उनके स्वर्गदूत और न उनका पुत्र। [33]सावधान और सतर्क रहो, क्योंकि तुम्हें पता नहीं कि वह समय कब आएगा। [34]इस बात को इस प्रकार समझो। कोई मनुष्य विदेश जाते समय अपने घर की ज़िम्मेदारी अपने नौकरों के हाथ में सौंप दे। वह हर एक नौकर को उसका काम समझाकर चौकीदार को आज्ञा दे जाए कि वह जागता रहे। [35]इसलिए तुम सब भी सतर्क रहो, क्योंकि पता नहीं कि घर का मालिक कब वापस आ जाए। शायद शाम के समय, आधी रात को, या सुबह-सुबह या यह भी हो सकता है कि वह सूरज निकलने के बाद आए। [36]ऐसा न हो कि वह अचानक आ जाए और तुम्हें सोता हुआ पाए। [37]जो मैं तुमसे कहता हूँ वही सबसे कहता हूँ, ‘जागते रहो।’”

14

प्रभु येशु के साथ छल

[1]मुक्ति-त्यौहार और रोटी-त्यौहार को दो दिन बाकी थे। प्रधान पुरोहित और धर्मगुरु इस कोशिश में थे कि किस प्रकार छल से प्रभु

13:25 यशायाह 13:10; 34:4; योएल 2:10 **13:26** दानिएल 7:13

येशु को गिरफ्तार कर मार डालें। [2]परंतु वे कहते थे, “मुक्ति-त्यौहार के दिनों में ऐसा नहीं करेंगे, कहीं ऐसा न हो कि लोगों में दंगे फैल जाए।”

महिला का अद्‌भुत भक्ति प्रदर्शन

[3]प्रभु येशु बैथनिया गाँव में शिमोन के घर पर खाना खा रहे थे। यह वही शिमोन है जिसे कोढ़ रोग हुआ था। एक औरत संगमरमर की बोतल में जटामांसी जड़ी-बूटी का बहुमूल्य और शुद्ध खुशबूदार तेल लेकर आई। उसने बोतल की सील तोड़ी और खुशबूदार तेल प्रभु येशु के सिर पर लगाने लगी।

[4]इस पर वहाँ के कुछ लोग नाराज़ हो गए। वे आपस में कहने लगे, “यह बहुमूल्य खुशबूदार तेल क्यों बरबाद किया गया? [5]इस तेल को हम तीन सौ से अधिक चाँदी के सिक्कों में बेच सकते थे और इससे मिले पैसे को गरीबों में बाँटा जा सकता था।” वे उस महिला को बहुत डाँटने लगे।

[6]परंतु प्रभु येशु ने कहा, “इस पर नाराज़ क्यों होते हो? इसने तो मुझे सम्मान देने के लिए एक अच्छा काम किया है। [7]गरीब तो तुम्हारे साथ हमेशा हैं और तुम जब चाहो उनकी सहायता कर सकते हो, पर मैं तुम्हारे साथ हमेशा नहीं रहूँगा। [8]जितना यह कर सकती थी, इसने किया। उसने मुझे खुशबूदार तेल से अभिषेक किया है। ऐसा मेरे अंतिम संस्कार के दिन होना था, परंतु उसने इसे समय से पहले ही कर दिया। [9]मैं तुमसे सच कहता हूँ, सारे संसार में जहाँ-जहाँ मेरे शुभ संदेश को सुनाया जाएगा, वहाँ-वहाँ इस औरत की याद में इस बात को बताया जाएगा।”

राजदूत यहूदा का बिक जाना

[10]तब बारह राजदूतों में से एक यहूदा इस्करियोत प्रधान पुरोहितों के पास गया कि वह प्रभु येशु को गिरफ्तार कराने में उनकी मदद करे। [11]जब प्रधान पुरोहितों ने सुना कि वह क्यों आया है तब वे बहुत खुश हुए और उसे पैसे देने का वचन दिया। तो अब यहूदा प्रभु येशु को गिफ्तार करवाने का सही मौका ढूँढ़ने लगा।

गुरु को धोखा देने वाला राजदूत अंतिम भोजन में शामिल

[12]रोटी-त्यौहार, अर्थात् मुक्ति-त्यौहार के पहले दिन भेड़ की बलि दी जाती थी। शिष्यों ने प्रभु येशु से पूछा, “आप क्या चाहते हैं कि हम आपके लिए त्यौहार का भोजन कहाँ तैयार करें?”

[13]उन्होंने दो शिष्यों को यह कहकर भेजा, “शहर में जाओ। वहाँ तुम्हें एक मनुष्य मिलेगा जो पानी से भरा घड़ा लिए जा रहा होगा। उसके पीछे-पीछे जाना [14]और जिस घर में वह जाए, वहाँ के मालिक से कहना कि गुरु ने यह पूछा है, ‘मेहमानों का वह कमरा कहाँ है जहाँ वह अपने शिष्यों के साथ त्यौहार का भोजन खाएँगे?’ [15]वह तुम्हें घर की पहली मंजिल पर तुम्हारे इस्तेमाल के लिए तैयार बड़ा कमरा दिखा देगा। वहीं तुम भोजन की तैयारी करना।”

[16]दो शिष्य शहर में गए और जैसा प्रभु येशु ने कहा था उन्होंने वहाँ सबकुछ वैसा ही पाया और मुक्ति-त्यौहार का भोजन तैयार किया।

[17]शाम के समय प्रभु येशु बारह राजदूतों के साथ उस घर में पहुँचे। [18]जब वे भोजन कर रहे थे तब प्रभु येशु ने कहा, “मैं तुमसे सच कहता हूँ, तुममें से एक, जो मेरे साथ भोजन कर रहा है, मुझे धोखा देगा।”

[19]यह बात सुनकर शिष्य दुखी हुए और एक-एक करके प्रभु येशु से पूछने लगे, “क्या वह मैं तो नहीं हूँ?”

[20]प्रभु येशु ने कहा, “वह बारह में से एक है और जो मेरे साथ कटोरे में निवाला डुबोकर खाता है वही मुझे धोखा देगा। [21]तेजस्वी मानव-पुत्र की तो जैसा परमात्मा-ग्रंथ में लिखा है हत्या कर दी जाएगी, परंतु उस मनुष्य को उसका परिणाम भुगतना होगा जो मानव-पुत्र को धोखा देगा। उस मनुष्य के लिए अच्छा होता कि वह पैदा ही न हुआ होता।”

परमात्मा और मनुष्य के बीच अनुबंध की पुष्टि

[22]भोजन करते समय गुरु येशु ने रोटी ली, परमात्मा से आशीर्वाद माँगकर उसके टुकड़े किए और शिष्यों को दिए और कहा, “लो, इसे मेरा शरीर समझो।” [23]उसके बाद उन्होंने अंगूर-रस का प्याला लिया और परमात्मा को धन्यवाद देकर शिष्यों को दिया और सबने उसमें से पिया। [24]तब प्रभु येशु ने कहा, “यह अंगूर-रस उस बलि के खून

को दिखाता है, जो बहुत से लोगों के लिए बहाया जाने वाला है। यह परमात्मा और इंसान के बीच किए गए अनुबंध की पुष्टि है। [25]मैं तुमसे सच कहता हूँ, अब मैं यह अंगूर-रस दुबारा केवल परमात्मा के साम्राज्य में ही जाकर पीऊँगा, उससे पहले नहीं।”

[26]तब भजन गाने के बाद प्रभु येशु और उनके शिष्य जैतून पहाड़ी पर चले गए।

प्रभु येशु ने पतरस के इन्कार की भविष्यवाणी की

[27]तब प्रभु येशु ने उनसे कहा, “तुम सब मुझे छोड़ कर भाग जाओगे। जैसा परमात्मा-ग्रंथ में यह लिखा है,

‘मैं चरवाहे पर हमला करूँगा
और भेड़ें तितर-बितर हो जाएँगी।’

[28]“परंतु जब परमात्मा मुझे मरे हुओं में से ज़िन्दा कर देंगे, उसके बाद मैं तुमसे पहले गलील प्रदेश को जाऊँगा।”

[29]शिष्य पतरस ने कहा, “चाहे सब आपका साथ छोड़ दें, परंतु मैं कभी नहीं छोड़ूँगा।”

[30]प्रभु येशु ने उत्तर दिया, “मैं तुमसे सच कहता हूँ, आज, इसी रात, मुरगे के दो बार बाँग देने से पहले, तुम तीन बार कहोगे कि तुम मुझे नहीं जानते हो।”

[31]किंतु पतरस मज़बूती से यही कहता रहा, “चाहे मुझे आपके साथ मरना भी पड़े तो भी मैं हरगिज़ नहीं कहूँगा कि मैं आपको नहीं जानता।” इसी प्रकार अन्य शिष्यों ने भी कहा।

प्रभु येशु का पहाड़-समान दुखों को सहना

[32]प्रभु येशु अपने शिष्यों के साथ गतसमनी नामक स्थान पर गए। तब उन्होंने उनसे कहा, “यहाँ बैठो जब तक मैं प्रार्थना कर रहा हूँ।” [33]उन्होंने पतरस, याकोब और योहन को अपने साथ लिया। प्रभु येशु उदास और दुखी थे। [34]उन्होंने शिष्यों से कहा, “मैं बहुत दुखी हूँ। ऐसा लगता है कि मेरे प्राण निकले जा रहे हैं। तुम यहीं ठहरो और मेरे साथ जागते रहो।”

14:27 जकरयाह 13:7

[35]फिर वह शिष्यों से थोड़ी सी दूर गए और घुटने टेक कर प्रार्थना करने लगे, “पिता परमात्मा, यदि संभव हो तो यह कठिन समय मुझ पर से टाल दीजिए। [36]प्यारे पिता, आपके लिए सबकुछ संभव है। इस दुख के पहाड़ को मुझ से दूर कर दें। परंतु जो मैं चाहता हूँ वह नहीं, पर जो आप चाहते हैं वह पूरा हो।”

[37]जब गुरु येशु लौटे तो शिष्यों को सोते हुए पाया। वह शिमोन पतरस से बोले, “सो रहे हो क्या? क्या मेरे साथ एक घंटा जागने की भी शक्ति तुममें नहीं? [38]प्रार्थना करते रहो ताकि जब परेशानियों में तुम्हारी परख हो तो तुम पाप का रास्ता न चुनों। मनुष्य की आत्मा तो मज़बूत है, पर उसका शरीर कमज़ोर है।”

[39]प्रभु येशु उसी जगह वापस चले गए और वहीं प्रार्थना करने लगे। [40]लौटने पर उन्होंने शिष्यों को फिर सोते हुए पाया। शिष्य भी नहीं जानते थे कि वे बार-बार क्यों सो जाते हैं। इसलिए उनकी समझ में नहीं आया कि प्रभु से क्या कहें।

[41]प्रभु येशु ने तीसरी बार आकर कहा, “अब भी सो रहे हो? बहुत हुआ, समय आ पहुँचा है। देखो, तेजस्वी मानव-पुत्र पापियों के हाथ सौंपा जाने वाला है। [42]उठो, चलो। देखो, मुझे धोखा देने वाला नज़दीक आ पहुँचा है।”

प्रभु येशु का गिरफ्तार होना

[43]प्रभु येशु अभी बोल ही रहे थे कि बारह राजदूतों में से एक यहूदा इस्करियोत आ पहुँचा। उसके साथ तलवारें और लाठियाँ लिए एक भीड़ थी जिसे प्रधान पुरोहितों, धर्मगुरुओं और समाज के बड़ों ने भेजा था। [44]यहाँ आने से पहले यहूदा ने उन्हें बता दिया था, “जिसको मैं चूमूँ, उसे गिरफ्तार कर के ले जाना।” [45]वह तुरंत प्रभु येशु के पास जाकर बोला, “गुरुजी” और यहूदा ने उनको चूम लिया।

[46]लोगों ने प्रभु येशु को पकड़ कर गिरफ्तार कर लिया। [47]इस पर पास खड़े शिष्यों में से एक ने तलवार खींची और महापुरोहित के सेवक पर चलाकर उसका कान काट दिया।

[48]प्रभु येशु ने भीड़ से कहा, “तुम तलवारें और लाठियाँ लेकर मुझे बंदी बनाने आए हो मानो मैं कोई खतरनाक क्रन्तिकारी हूँ! [49]मैंने

रोज़ाना परमात्मा के मंदिर के आँगन में तुम्हें उपदेश दिए और तुम्हारे साथ रहा, पर उस समय तुमने मुझे नहीं पकड़ा। परंतु परमात्मा-ग्रंथ में लिखा पूरा होना ज़रूरी है।”

[50]तब सब शिष्य प्रभु येशु को छोड़कर भाग गए। [51]परंतु एक युवक अपने शरीर पर सिर्फ चादर लपेटे अभी भी प्रभु येशु के पीछे-पीछे आ रहा था। जब लोग उसे पकड़ने की कोशिश करने लगे, [52]तो वह अपनी चादर उन्हीं के हाथों में छोड़ कर नंगा ही भाग गया।

प्रभु येशु को दोषी साबित करने की साज़िश

[53]वे प्रभु येशु को महापुरोहित के पास ले गए। वहाँ सब प्रधान पुरोहित, समाज के बड़े और धर्मगुरु इकट्ठा थे। [54]पतरस कुछ दूरी पर रहते हुए प्रभु येशु के पीछे गया। वह महापुरोहित के आँगन तक पहुँचा और वहाँ पहरेदारों के साथ बैठकर आग तापने लगा।

[55]प्रधान पुरोहित और सारी धर्म-महासभा प्रभु येशु को मार डालने के लिए उनके विरुद्ध सबूत ढूँढ़ रही थी, पर उन्हें कुछ न मिला। [56]अनेक लोगों ने उनके विरुद्ध झूठी गवाहियाँ दीं पर उनकी गवाहियाँ एक-दूसरे से मेल नहीं खाती थी। [57]आखिरकार कुछ लोगों ने उनके विरुद्ध यह झूठी गवाही दी, [58]“हमने उसे यह कहते सुना है कि वह इस मंदिर को गिरा देगा जिसे हमने बनाया है। इसने यह भी दावा किया है कि तीन दिनों में वह बिना किसी की मदद के दूसरा बना देगा।” [59]पर इस बारे में भी उनकी गवाही एक दूसरे से मेल नहीं खाती थी।

[60]तब महापुरोहित ने बीच में खड़े होकर प्रभु येशु से पूछा, “ये लोग जो तुम पर आरोप लगा रहे हैं उसके बचाव में तुम कुछ बोलोगे नहीं?”

[61]पर प्रभु येशु मौन रहे और कुछ जवाब न दिया। महापुरोहित ने फिर पूछा, “क्या तुम मुक्तिदाता, तेजस्वी परमात्मा के पुत्र हो?”

[62]प्रभु येशु ने कहा, “हाँ, मैं हूँ, और तुम तेजस्वी मानव-पुत्र को सर्वशक्तिमान परमात्मा के सिंहासन के दाईं ओर बैठा शासन करते और बादलों पर सवार होकर आता हुआ देखोगे।”

[63]इस पर महापुरोहित ने गुस्से में अपने कपड़े फाड़कर कहा, “क्या हमें अब भी गवाहों की ज़रूरत है? [64]तुमने इसके मुँह से परमात्मा की निंदा सुन ली है। अब तुम्हारा निर्णय क्या है?”

उन सबने एक आवाज़ में कहा कि इसे मौत की सज़ा मिलनी चाहिए।

[65]तब कई लोगों ने प्रभु येशु पर थूका, उनकी आँखों पर पट्टी बांधकर उन्हें घूँसे मारे और कहने लगे, “बता तुझे किसने मारा!” महापुरोहितों के कर्मचारियों ने भी उनको पकड़कर थप्पड़ मारे।

शिष्य का गुरु को पहचानने से इंकार करना

[66]जब यह सब हो रहा था पतरस उस समय नीचे आँगन में ही था और महापुरोहित की एक सेविका वहाँ आई। [67]उसने पतरस को गौर से देखा। उस समय वह वहाँ आग ताप रहा था। सेविका उससे बोली, “तुम भी तो उस नासरत निवासी येशु के साथ थे।”

[68]पतरस ने मना करते हुए कहा, “मैं नहीं जानता कि तुम क्या बात कर रही हो।” वह बाहर दरवाज़े की ओर चला गया और उसी समय मुरगे ने बाँग दी।+

[69]वह सेविका उसको देखकर पास खड़े हुए लोगों से फिर कहने लगी, “यह भी उन्हीं में से एक है।” [70]पतरस ने फिर मना किया। कुछ समय बाद पास खड़े हुए लोग भी पतरस से बोले, “तुम ज़रूर उन्हीं में से एक हो, क्योंकि तुम्हारी भाषा गलील-निवासियों जैसी है।”

[71]तब पतरस ने कसम खाई और कहा, “मैं उस मनुष्य को नहीं जानता। अगर मैं झूठ बोल रहा हूँ तो परमात्मा मुझको भस्म कर दें।” [72]उसी समय मुरगे ने दूसरी बार बाँग दी। अब पतरस को प्रभु येशु की बात याद आई, “मुरगे के दो बार बाँग देने से पहले तुम तीन बार कहोगे कि तुम मुझे नहीं जानते।” और पतरस फूट-फूटकर रोने लगा।

15

धर्मगुरुओं का प्रभु येशु पर आरोप लगाना

[1]सुबह होते ही प्रधान पुरोहितों ने समाज के बड़ों, धर्मगुरुओं और सारी धर्म-महासभा ने साथ मिलकर प्रभु येशु के बारे में विचार-विमर्श किया। तब वे प्रभु येशु को बाँधकर ले गए और उन्हें राज्यपाल पिलातुस को सौंप दिया।

[2]पिलातुस ने पूछा, “क्या तुम यहूदियों के राजा हो?”

प्रभु येशु ने उत्तर दिया, “आपने स्वयं ही कह दिया है।”

[3]प्रधान पुरोहित उन पर अनेक आरोप लगाने लगे [4]तो पिलातुस ने उनसे फिर पूछा, “देखो, ये तुम पर अनेक आरोप लगा रहे हैं। क्या तुम अपने बचाव में कुछ बोलोगे नहीं?” [5]पर प्रभु येशु कुछ नहीं बोले। इससे पिलातुस को हैरानी हुई।

लोगों ने निर्दोष के बजाय डाकू चुना

[6]मुक्ति-त्यौहार के समय राज्यपाल हमेशा लोगों द्वारा चुने गए एक कैदी को मुक्त करता था। [7]उस समय एक कैदी था जिसका नाम था बराबस। उसे और कुछ अन्यों को एक दंगे के दौरान हत्या के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। [8]भीड़ ने राज्यपाल पिलातुस के पास जाकर उससे कहा कि वह लोगों के लिए अपनी प्रथा के अनुसार एक कैदी को रिहा करे।

[9]पिलातुस ने पूछा, “क्या मैं तुम्हारे लिए यहूदियों के राजा को छोड़ दूँ?” [10]पिलातुस जानता था कि प्रधान पुरोहित प्रभु येशु से ईर्ष्या करता है, इसलिए उसने उन्हें पकड़वाया है।

[11]परंतु प्रधान पुरोहितों ने भीड़ को उकसाया कि पिलातुस प्रभु येशु के बदले बराबस को रिहा करे। [12]तब पिलातुस ने उनसे फिर पूछा, “जिसे तुम ‘यहूदियों का राजा’ कहते हो, उसका मैं क्या करूँ?”

[13]वे ऊँची आवाज़ में बोले, “उसे कीलों से क्रूस पर ठोको!”

[14]“क्यों? उसने क्या गलती की है?” पिलातुस ने उनसे पूछा।

वे और भी जोर से चिल्लाने लगे, “उसे कीलों से क्रूस पर ठोको!”

[15]तब पिलातुस ने भीड़ को संतुष्ट करने की इच्छा से बराबस को छोड़ दिया और प्रभु येशु को कोड़े लगाकर कीलों से क्रूस पर ठुकवाने के लिए सौंप दिया।

प्रभु येशु का मज़ाक उड़ाया जाना

[16]राज्यपाल के सैनिक प्रभु येशु को किले के आँगन में ले गए और सारे सैनिकों ने मज़ाक उड़ाने के लिए उन्हें घेर लिया। [17]सैनिकों ने प्रभु येशु को बैंगनी रंग की शाही पौशाक पहनाई और काँटों का ताज बनाकर उनके सिर पर रखा। [18]तब वे उनका मज़ाक उड़ाते हुए कहने

लगे, "यहूदियों के राजा, आपकी जय हो।" [19]उन्होंने प्रभु येशु के सिर पर डंडी से मारा। उन पर थूका और उनका मज़ाक उड़ाने के लिए घुटने टेककर उनकी वंदना की। [20]जब वे प्रभु येशु का अपमान कर चुके तब उनकी बैंगनी रंग की पौशाक उतारकर उन्हीं के कपड़े पहना दिए और उन्हें क्रूस पर कीलों से ठोकने के लिए ले गए।

क्रूस

[21]उसी समय साइरेन देश का निवासी शिमोन जो सिकंदर और रूफस का पिता था, शहर की ओर जा रहा था। सैनिकों ने उसे आज्ञा दी कि वह प्रभु येशु की क्रूस उठाकर ले चले।

[22]सैनिक प्रभु येशु को गोलगोथा नामक स्थान पर लाए जिसे कपाल-स्थान भी कहते हैं। [23]उन्होंने उनको अंगूर-रस में कड़वा रस मिलाकर पीने को दिया, परंतु प्रभु येशु ने नहीं पिया। [24]तब उन्होंने प्रभु येशु को क्रूस पर कीलों से ठोक दिया। और यह तय करने के लिए कि प्रभु येशु के कपड़े कौन लेगा, सैनिकों ने पर्ची पर अपने-अपने नाम लिख कर डाले।

[25]सुबह नौ बजे का समय था जब उन्होंने प्रभु येशु को क्रूस पर चढ़ाया था। [26]प्रभु येशु की क्रूस पर यह सूचना लगी हुई थी, "यहूदियों का राजा।" [27-28]उनके साथ उन्होंने दो क्रांतिकारियों को भी अलग-अलग क्रूस पर कीलों से ठोका था, एक को प्रभु येशु की क्रूस की दाईं ओर और दूसरे को बाईं ओर।

[29]उधर से आने जाने वाले लोग प्रभु येशु की निंदा कर रहे थे और सिर मटका-मटकाकर कहते थे, "वाह, तुम वही हो न जिसने दावा किया था कि तुम मंदिर को गिरा सकते हो और तीन दिनों में उसे फिर से बना सकते हो। [30]तो अपने आप को बचाओ और क्रूस से नीचे उतर आओ!"

[31]इसी प्रकार प्रधान पुरोहित और धर्मगुरु उनका मज़ाक उड़ाते हुए एक-दूसरे से कह रहे थे, "इसने दूसरों को बचाया, पर यह अपने आप को नहीं बचा सका। [32]अगर यह इज़राएल का राजा और मुक्तिदाता अभी क्रूस से उतर आएगा तो हम भी देख लेंगे और इस पर विश्वास कर लेंगे।" जो दो क्रन्तिकारी प्रभु येशु के साथ क्रूस पर चढ़ाए गए थे, वे भी प्रभु येशु को बुरा-भला कह रहे थे।

प्रभु येशु का क्रूस पर आखिरी साँस लेना

[33]दोपहर बारह से लेकर तीन बजे तक सारे देश में अंधकार छाया रहा। [34]लगभग तीन बजे प्रभु येशु ने ऊँची आवाज़ में कहा, “ऐलोए, ऐलोए लमा सबक्तनी” जिसका अर्थ है, “हे मेरे परमात्मा, हे मेरे परमात्मा, आपने मुझे क्यों छोड़ दिया?”*

[35]यह सुनकर पास खड़े लोगों में से कुछ बोले, “वह परमात्मा के प्रवक्ता एलियाह को पुकार रहा है।” [36]तब उनमें से एक व्यक्ति ने दौड़कर खट्टे अंगूर के रस में स्पंज डुबोया और उसे डंडी पर रखकर प्रभु येशु को पीने को दिया और कहा, “ठहर जाओ, देखें, प्रवक्ता एलियाह इसे बचाने आते हैं या नहीं।”

[37]पर प्रभु येशु ने ऊँची आवाज़ में चिल्लाकर अपनी आखिरी सांस ली। [38]और उसी समय, यरूशलम के एकमात्र मंदिर का पवित्र परदा ऊपर से नीचे तक बीच में से फटकर दो हिस्सों में बंट गया।

[39]एक रोम का सेना-अधिकारी उनके क्रूस के सामने खड़ा था। जब उसने देखा कि प्रभु येशु कैसे मरे हैं तो वह बोला, “सचमुच, यह मनुष्य परमात्मा का पुत्र था।”

[40]कई महिलाएँ भी यह सब दूर से देख रही थीं। इनमें मगदलवासी मरियम, छोटे याकोब और योसेस की माता मरियम और शलोमी थीं। [41]जब प्रभु येशु गलील प्रदेश में ही थे तब से ये महिलाएँ उनके साथ थीं और उनकी सेवा किया करती थीं। इनके अलावा और भी महिलाएँ थीं जो प्रभु येशु के साथ यरूशलम आई थीं।

प्रभु येशु के भक्त का हिम्मत दिखाना

[42]अब शाम हो गई थी। यह आराम-दिवस से एक दिन पहले था और इस दिन यहूदी लोग आराम-दिवस की तैयारियाँ किया करते थे। [43]अरिमतेया-निवासी योसफ, जो यहूदी धर्म-महासभा का सम्मानित सदस्य था और परमात्मा के साम्राज्य के आने का इंतज़ार कर रहा था, वह हिम्मत करके राज्यपाल पिलातुस के पास गया और उससे प्रभु येशु

15:34 भजन शास्त्र 22:1

* **15:34** *हे मेरे परमात्मा, हे मेरे परमात्मा, आपने मुझे क्यों छोड़ दिया? -* मत्तियाह 27:46 नोट देखें

का शव माँगा। [44]पिलातुस योसफ के मुँह से प्रभु येशु के मरने की बात सुनकर हैरान रह गया। उसने सेना-अधिकारी को बुलाकर पूछा, “क्या वह मर चुका है?” [45]सेना-अधिकारी ने बता दिया, फिर पिलातुस ने योसफ को शव दिला दिया। [46]योसफ ने मलमल की चादर खरीदी और शव को क्रूस से उतारकर उसमें लपेटा और चट्टान में खुदी हुई शव रखने वाली गुफा में उसको रख दिया। गुफा के मुँह पर योसफ ने एक भारी पत्थर लुढ़का कर लगा दिया। [47]मगदलवासी मरियम और योसेस की माता मरियम ने देख लिया था कि प्रभु येशु का शव कहाँ रखा गया है।

16

परमात्मा ने प्रभु येशु को ज़िन्दा कर दिया

[1]शाम को जब आराम-दिवस बीत गया, मगदलवासी मरियम, याकोब की माता मरियम और शलोमी ने खुशबूदार मसाले खरीदे कि प्रभु येशु के शव पर लगाएँ। [2]हफ्ते के पहले दिन, सवेरे-सवेरे जबकि सूरज निकलने वाला था, वे उस गुफा पर आईं जहाँ शव रखा हुआ था। [3]वे आपस में कह रही थीं, “हमारे लिए कौन गुफा के मुँह पर से पत्थर लुढका कर हटाएगा?” [4]पर जब उन्होंने देखा तो पाया कि गुफा के मुँह पर लगा बड़ा पत्थर पहले से ही हटा हुआ है।

[5]गुफा के अंदर आने पर उन्होंने देखा कि सफेद कपड़े पहने हुए एक युवक दाईं ओर बैठा है और वे स्त्रियाँ घबरा गईं। [6]पर उस युवक ने उनसे कहा, “घबराओ मत। तुम नासरत-निवासी येशु को ढूँढ़ रही हो न, जो क्रूस पर चढ़ाए गए थे। वह अब यहाँ नहीं हैं। परमात्मा ने उन्हें उनकी मौत होने के बाद भी ज़िन्दा कर दिया है! देखो यह स्थान जहाँ लोगों ने उन के शव को रखा था अब खाली है। [7]अब जाओ, और उनके शिष्यों और खासतौर से पतरस से कहो कि प्रभु येशु तुमसे पहले गलील प्रदेश को जा रहे हैं। वहाँ तुम उनके दर्शन करोगे, जैसा उन्होंने क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले कहा था।”

[8]वे गुफा से निकलकर भागीं, क्योंकि वे डर से काँप रही थीं और हैरान थीं।

उन्होंने किसी से कुछ नहीं कहा, क्योंकि वे डर गई थीं।+

[9] [हफ्ते के पहले दिन, सुबह ज़िन्दा हो जाने के बाद प्रभु येशु ने सबसे पहले उस मगदलवासी मरियम को दर्शन दिया जिसमें से उन्होंने सात अशुद्ध आत्माएँ निकाली थीं। [10]मरियम ने जाकर यह समाचार प्रभु येशु के साथियों को सुनाया जो दुख में डूबे हुए थे और रो रहे थे। [11]जब उन्होंने सुना कि प्रभु येशु ज़िन्दा हैं और मरियम को दर्शन दिया है तो उन्हें उसकी बात पर विश्वास नहीं हुआ।

[12]इसके बाद उनमें से दो शिष्य किसी गाँव की ओर चले जा रहे थे अचानक प्रभु येशु ने उन्हें दर्शन दिया। पहले तो शिष्य उन्हें पहचान नहीं सके क्योंकि वह अलग दिख रहे थे। [13]उन्होंने लौटकर दूसरे शिष्यों को इस के बारे में बताया, परंतु फिर भी अन्य शिष्यों को उनकी बात पर विश्वास नहीं हुआ।

[14]इसके बाद ग्यारह राजदूतों के भोजन करते समय प्रभु येशु ने उनको दर्शन दिया और उनके विश्वास न करने और मन की कठोरता पर उन्हें डाँटते हुए कहा, “जिन्होंने मुझे ज़िन्दा देखा, उनकी बात पर भी तुमने विश्वास नहीं किया।”

[15]तब उनसे कहा, “सारे संसार में जाओ और हर एक व्यक्ति को मेरे बारे में शुभ संदेश को सुनाओ। [16]जो मुझ में आस्था रखेगा और समर्पण-स्नान लेगा, उसको मुक्ति मिलेगी, परंतु जो आस्था नहीं रखेगा, वह दोषी है और उसे दंड मिलेगा। [17]आस्था रखने वाले अद्‌भुत निशानियाँ दिखाएँगे। वे मेरे नाम से अशुद्ध आत्माओं को निकालेंगे, नई-नई आत्मिक भाषाएँ बोलेंगे, [18]साँपों को हाथ से उठा लेंगे और यदि वे ज़हर पी लें तो भी उनकी कुछ हानि न होगी। वे बीमारों पर हाथ रखेंगे और बीमार ठीक हो जाएँगे।”

[19]प्रभु येशु उनसे बातें करने के बाद ऊपर परमस्वर्ग में उठा लिए गए और परमात्मा के सिंहासन की दाईं ओर बैठ गए। [20]तब शिष्य बाहर जाकर सब जगह यह बात बताने लगे। प्रभु उनके द्वारा कार्य करते रहे और जो अद्‌भुत निशानियाँ वे दिखा रहे थे, जिससे प्रमाणित होता है की जिस शुभ संदेश को वे बताते हैं वह सत्य है।]